चन्दामामा
मार्च १९६४
६०

चन्दामामा

केवल विक्स वेपोरब ही
सर्दी-जुकाम से जकड़े तीनों भागों पर तुरंत असर करता है...

सर्दी-ज़ुकाम को रातोंरात दूर करता है

विक्स वेपोरब सारी रात दो तरीकों से नाक, गले तथा छाती में असर करता है — आपकी सर्दी से हुई परेशानियों से आराम पहुंचाता है। आप आसानी से सांस लेने लगते हैं और चैन की नींद सोते हैं।

सर्दी के लक्षण (जैसे नाक का बहना, गले की खराश, खांसी, छाती में जकड़न) दिखायी पड़ते ही तुरंत विक्स वेपोरब इस्तेमाल कीजिये। केवल विक्स वेपोरब ही सर्दी-जुकाम से जकड़े सभी तीनों भागों — नाक, गले तथा छाती में तुरंत असर करता है और आपको सर्दी-जुकाम के सभी कष्टों से रातोंरात आराम दिलाता है। सोते समय विक्स वेपोरब नाक, गले, छाती-तथा पीठ पर मलिये। तुरंत ही आप विक्स वेपोरब की गरमाहट महसूस करने लगते हैं। साथ ही साथ आपके शरीर की सामान्य गरमी से वेपोरब शीघ्र ही औषधियुक्त भाप में बदल जाता है। यह भाप सारी रात आपके हर श्वास के साथ भीतर जाती रहती है। जबकि आप चैन की नींद सोते हैं यह आश्चर्यजनक द्विविध क्रिया जहां सर्दी की तकलीफ सबसे ज्यादा है वहां आपकी नाक, गले तथा छाती में गहराई तक होती रहती है। सुबह तक आपका सर्दी-जुकाम जाता रहता है और आप फिर से चुस्त और स्वस्थ हो जाते हैं।

विक्स वेपोरब

सारे परिवार के लिए गुणकारी — पुरुषों, महिलाओं और बच्चों

SYNCHRO
BOX
MADE IN INDIA

Agfa

मेरे
हमेशा से
मनपसन्द
साठे
बिस्कुट
साठे बिस्कुट एण्ड चाकलेट कं० लि० पूना-१

१. संजीव कुमार चटर्जी, पटिया

क्या आप "चन्दामामा" में बड़े बड़े महापुरुषों की जीवनी छाप सकते हैं ?

छाप चुके हैं, और सुविधानुसार यथा समय छापेंगे।

२. गोपालराव केशवराव, कानपुर

कृपया यह बताने का कष्ट करें कि "भयंकर घाटी" कब तक आयेगी ?

अभी तो घाटी में पहुँच रहे है, देखिये क्या होता है।

३. राजेन्द्र सिंह, पूर्वी पंजाब

क्या "भयंकर घाटी" नामक कहानी किताब रूप में मिल सकती है ?

अभी तो "चन्दामामा" में ही धारावाहिक रूप से छप रही है। पुस्तक नहीं छपी हैं।

४. वल्लभदास अग्रवाल, गोरखपुर

क्या फ़ोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता में एक व्यक्ति कई हल भेज सकता है या केवल एक ?

चाहे जितने, पर अलग अलग कार्ड पर।

५. मुरारीलाल क्याल, रानीगंज

चन्दामामा अगर विदेशों में जाता है, तो वह किस भाषा में छप कर जाता है ?

उन्ही छः भाषाओं में, जिन में यह छपता है। हिन्दी, मराठी, गुजराती, तेलुगु, तमिल और कन्नड़।

६. खेलसिंह पंजाबी, रंगिला, बिलासपुर

क्या आप "चन्दामामा" में "बाल जीवन" नामक स्तम्भ प्रारम्भ करनेवाले हैं ?

सारी पत्रिका ही बाल जीवन के लिए है।

"चन्दामामा" में "पाठकों के मत" नामक स्तम्भ बन्द क्यों कर दिया ?

बन्द तो नहीं किया है।

७. हरजीतसिंह, पलिमपुर

क्या "चन्दामामा" को आप पंजाबी में प्रकाशित करेंगे ?

अभी तो नहीं।

८. प्रवत कु. महापात्र, देवगढ़

क्यों "मेरे देखे कुछ देशों की झलक" सचित्र है ?

हाँ।

९. मुरारी गोस्वामी, आदिपुर

क्यों "मेरे देखे कुछ देशों की झलक" नामक पुस्तक में लेखक ने सचमुच योरप के देश देखे हैं या कि सिर्फ उनकी कल्पना मात्र ही है ?

कल्पना नहीं है। और इस पुस्तक में उनका यात्रा वृत्तान्त भी है।

१०. मधुसूदन खत्री, उज्जन

मैं "विचित्र जुड़वाँ" पुस्तक मँगाना चाहता हूँ। बताइए कि इसके लिए क्या करना चाहिए ?

इस किताब के लिए १ रु. ५० नये पैसे मेनेजर चन्दामामा पब्लिकेशन्स के नाम मनिऑर्डर द्वारा भेजिए। पुस्तक आपको प्राप्त होगी।

ब्रिटैनिया
ग्लैक्सो
ब्रिटैनिया
बिस्कुट

सीखने में देर क्या, सबेर क्या

खाना पकाना सीखना, यह तो स्याना होने की बहुत सी बातों में से एक है। आप भी उसे एक बात जरूर सिखायें, वह यह कि दांतों व मसूड़ों का नियमित रूप से ध्यान कैसे रखा जाय। दादी माँ बन जाने पर भी उसका चेहरा अच्छे व असली दांतों से सुहाना रहेगा। वह आप की बुद्धि की प्रशंसा करेगी और धन्यवाद देगी कि आपने उसे सड़े-गले दांतों और मसूड़ों की पीड़ा से बचा लिया।

आज ही अपने बच्चों को सब से अच्छी आदत डालें- दांतों व मसूड़ों की सेहत के लिए उन्हें हर रोज फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना सिखायें। अमरीका के दंत-डाक्टर आर. जे. फोरहन का यह टूथपेस्ट दुनिया में ऐसा एक ही टूथपेस्ट है, जिस में मसूड़ों को मजबूत व अच्छा, दांतों को चमचमाता सफ़ेद रखने की खास चीजें हैं।

यह शुभ निश्चय अभी कर लें: अपने बच्चों को जिन्दगीभर उपयोगी आदत यानी रोज फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना आज ही सिखायें। और "CARE OF THE TEETH & GUMS" नामक रंगीन पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ्त प्रति के लिए डाक-खर्च के १५ न. पैसे के टिकट इस पते पर भेजें: मैनर्स डेंटल एडवाइजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१.

COUPON

Please send me a copy of the booklet
"CARE OF THE TEETH AND GUMS"

Name..

Address...

C. 1 ....

Forhan's

चन्दामामा
संचालक : चक्रपाणी
कई बार कई पाठक लिखते हैं कि प्रसिद्ध पुस्तकों का कथा रूप "चन्दामामा" में दिया जाय।
हम शेक्सपीयर के बहुत से नाटकों का कथा रूप पहिले ही दे चुके हैं। इस बार संस्कृत की प्रसिद्ध पुस्तक दशकुमार चरित का संक्षिप्त कथा रूप दे रहे हैं। इस तरह, हम अनुमान करते हैं, पाठक प्रसिद्ध पुस्तकों से परिचित हो सकेंगे और अपना ज्ञानवर्धन कर सकेंगे।
वर्ष : १५ मार्च १९६४ अंक : ७

भारत का इतिहास

तुग़लक वंश सुल्तान मोहम्मद से समाप्त हो गया। उसके बाद दिल्ली प्रमुखों ने दौलतखान लोदी को गद्दी पर बिठाया। परन्तु भारत में स्थित तैमूर के प्रतिनिधि, खिज़्रखानने जो मुल्तान पर शासन करता था, सेना के साथ आकर, १४१४ मई के अन्त में, दिल्ली को वश में कर लिया। दौलतखान कैदी हो गया और उसे हिस्सार फ़िरूज़ा को भेजा गया। कुछ ऐतिहासिकों का विश्वास है, खिज़्रखान मोहम्मद फरिश्ता के वंश का था। इसलिए उसके वंश का नाम सैय्यद वंश रखा गया। वह समर्थ नहीं था। उसके सात वर्ष के शासन में कुछ भी उल्लेखनीय नहीं है। दिल्ली साम्राज्य दिल्ली के आस पास के कुछ जिलों से आगे नहीं बढ़ा। इस छोटी-सी जगह में भी प्रायः बगावतें होती रहतीं। उनको दबाने के लिए खिज़्रखान के साथ उसके मन्त्री ताजुल्मुल्क ने भी काफी कोशिश की। १४२१ में कुछ महीनों के फासले में दोनों मर गये।

खिज़्रखान जिस दिन मरा उसी दिन ही (मई २०, १४२१) को उसके लड़के मुबारक शा को दिल्ली के प्रमुखों ने गद्दी पर बिठाया। यह भी समर्थ नहीं था। इसने कुछ विद्रोह तो शान्त किये, पर खोकरों का खतरा बढ़ा। इसके दरबार के हिन्दुओं का दबदबा भी बढ़ा। जब यह यमुना के तट पर मुबारकाबाद नगर के निर्माण का पर्यवेक्षण कर रहा था, तो हिन्दू-मुस्लिम षड्यन्त्रकारियों ने इसको मार दिया। १९, फ़रवरी १४३४ के इस हत्या के षड्यन्त्रकारियों का सरदार था, वज़ीर सर्वरुल्मुल्क।

---

२९. सैय्यद वंश

इसके बाद इसका वारिस मुहम्मद सुल्तान बना। यह भी असमर्थ था। षड्यन्त्रकारी सर्वरुल्मुल्क के मर जाने के बाद इसे अपना सामर्थ्य दिखाना चाहिए था, पर इसने दिखाया नहीं। माल्व का राजा महम्मद शा खिल्जी ने दिल्ली पर आक्रमण किया। तब बुहलुल खान ने, जो सुल्तान की मदद करने के लिए आया था, स्वयं दिल्ली के सुल्तान होने की कोशिश की। इसका प्रयत्न असफल रहा। परन्तु सैय्यदों की स्थिति दिन प्रति दिन गिरती गई। दिल्ली से बीस कोस दूर सामन्त भी विद्रोह की तैयारी करने लगे। मुहम्मद शा १४४५ में मर गया। उसका लड़का अला उद्दीन आलम शा जब गद्दी पर आया, तो दिल्ली सुल्तान में दिल्ली और उसके आसपास के कुछ ग्राम ही रह गये थे। इस नये सुल्तान की तुल्ना में पुराने सुल्तान ही अच्छे थे। १४५१ में अपना राज्य बुहलुल खान लोदी को सौंपकर, यह अपने इष्ट प्रदेश बदाऊँ में रहने लगा। दिल्ली के गद्दी पर आनेवालों में यह पहिला अफगान था। यह लोदी के वंश का था। यह जब लाहौर सरहिन्द में राज-प्रतिनिधि के तौर

पर काम कर रहा था, तो आलम शा के सिंहासन को, हमीद खान नामक मन्त्री की सहायता से १९ अप्रैल १४५१ को, इसने ले लिया था। यह पहिले के सुल्तानों की तरह न था। यह ताकतवर योद्धा था। अफगानों की सहायता से इसने हमीद खान को कैद में डाल दिया और उसके प्रभाव को कम कर दिया। मेवाड़, सम्भल, मैनपुरी, सुकेत, रेवाड़ी, जो स्वतन्त्र हो गये थे, उसको इसने वश में किया। जौनपुर के लिए इसने युद्ध किया और वहाँ १४८६ में, उसने अपने लड़के बार्बक शा को

राज-प्रतिनिधि नियुक्त किया। ग्वालियर के राजा कितर सिंह को सज़ा देकर, जब वह आ रहा था, तो रास्ते में वह बीमार पड़ा, १४८९ में जुलाई में मर गया।

सुल्तान का दूसरा लड़का निज़ाम खान, सुल्तान सिकन्दर शा के नाम से गद्दी का उत्तराधिकारी घोषित किया गया। यह बड़ा शक्तिशाली था। तीन लोदी सुल्तानों में यह ही सबसे अधिक समर्थ था। इसने राज्य में अराजकता की। प्रमुख अफ़गान जागीरदारों के मिल्कियत आदि की इसने परीक्षा करवायी। सामन्तों को इसने नियन्त्रण में रखा। १५०४ में जहाँ आज आगरा है वहाँ एक नगर बनवाया। आखिर तक वह विद्रोहियों का दमन करता रहा और २१ नवम्बर १५१७ को आगरा में ही मर गया।

जिस दिन यह मरा, उसी दिन आगरा में इसका लड़का, इब्राहीम सुल्तान बना। उसी समय इब्राहीम के भाई जलाल खान को कुछ लोगों ने जौनपुर का राजा बनाने की कोशिश की, पर उनकी कोशिश कारगर न हुई। जलाल पकड़ा गया और सुल्तान के हुक्म पर मार दिया गया।

नया सुल्तान युद्ध में तो निपुण था। पर वह समयज्ञ न था। इसी वजह से इसका नाश हुआ। अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए इसने उन्नत कर्मचारी लोदिनी, फोमूली, लोदी वंश के लोगों को खूब सताया। अफ़गान प्रमुख सब इसके शत्रु हो गये। सुल्तान के मित्र दौलतखान लोदी और आलेखान काबुल के परिचालक बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए बुलाया।

महाभारत

एक बार विश्वामित्र, कण्व, नारद द्वारका आये। रोहि और वसुदेव के लड़के सारण और कुछ यादव मिलकर, जाम्बवती और कृष्ण के लड़के साम्ब को स्त्री वेष पहिनाकर, मुनियों के पास ले गये। उन्होंने मुनियों से कहा—"महामुनियो! ये गर्भवती हैं। चूँकि ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जिसे आप नहीं जानते हों, कृपया यह बताइये कि इनके क्या बच्चा पैदा होगा। हम अनुगृहीत होंगे।"

मुनियों ने क्रुद्ध होकर कहा—"यह साम्ब है। इसके पेट से लोहे का मूसल पैदा होगा और वह वृष्टि और अन्धक वंशों को खतम कर देगा।" यह शाप देकर, कृष्ण को देखकर, मुनि अपने रास्ते चले गये।

जैसा कि उन्होंने कहा था, साम्ब ने मूसल को पैदा किया। कृष्ण ने उसको चूर्ण करने की और उस चूर्ण को समुद्र में मिलाने की आज्ञा दी।

फिर द्वारका में एक घोषणा की गई। नगर में मद्य-पान की मनाई की गई। यह मनाई वृष्टि और अन्धक वंशीयों पर भी लागू होती थी। यदि किसी ने पिया, उसके तो फाँसी की सज़ा मिलेगी ही उसके सम्बन्धियों को भी फांसी पर लटका दिया जायेगा। चूँकि शाप के कारण यह प्रतिबन्ध घोषित किया गया था, इसलिए न पीने का हरेक ने नियम बना लिया।

उनके इतने सावधान रहने पर भी दुश्शकुन दिखाई देने लगे। नगर की वीथियों में असंख्य चूहे फिरने लगे। जहाँ

देखो, वहाँ टूटे घड़ों के ठीकरे दिखाई देने लगे। पक्षियों का चिल्लाना, जन्तुओं का चिल्लाना बदल गया।

इन बातों को देखकर कृष्ण ने यादवों से कहा—"महाभारत के युद्ध से पहिले भी इसी प्रकार के शकुन दिखाई दिये थे। ये जन नाश को सूचित करते हैं, युधिष्ठिर का कहना ठीक था।"

वह सब यादवों को समुद्र तट की यात्रा पर लेकर निकला। वृष्टि और अन्धक अपनी अपनी पत्नियों के साथ समुद्र तट पर गये। खाने पीने की चीज़ें, माँस, मद्य आदि तैय्यार किये गये। हाथियों पर, रथों में, घोड़ों पर सवार हो, जहाँ जहाँ वे चाहते थे, वहाँ वहाँ उन्होंने अपने पड़ाव किये।

कृष्ण का बचपन का मित्र उद्धव, जब यादव वीरों को समुद्र के पास ले जा रहा था, कृष्ण ने उसको मना नहीं किया।

यादवों के व्यवहार की कोई सीमा न रही। उन्होंने बन्दरों को भोजन दिया। वाद्य बजे। नृत्य शुरु हुआ। सब पीने लगे। कृष्ण के पास बैठे बलराम और कृतवर्मा भी पीने लगे। सात्यकी ने नशे में कृतवर्मा से कहा—"तुम थे, इसलिए अश्वत्थामा के साथ सोते हुए लोगों को मार दिया। ये काम क्षत्रिय करते हैं। यादव इस पर हर्ष नहीं करते।" प्रद्युम्न ने भी कृतवर्मा पर ताना कसा।

"अरे हाँ हाँ टुंडे! उपवास किये हुए भूरिश्रव को मारनेवाला तू ही बड़ा क्षत्रिय है?" कृतवर्मा ने कहा। कृष्ण ने कृतवर्मा की ओर तरेरा। "इस नीच के भाई, शतध्वनि ने ही तो शमन्तक मणि के लिए सत्राजित को मारा था।" सात्यकी ने

कृष्ण से कहा। यह सुन सत्यभामा ने रोते हुए, कृष्ण की गोदी में गिरकर उसको गुस्सा दिलाया। "तुम ठहरो जी, इस दुष्ट को मैं अभी धृष्टद्युम्न और शिखण्डी के पास भिजवा देता हूँ।" कहता सात्यकी उठा और उसने तलवार से कृतवर्मा का सिर काट दिया।

चूँकि उसने कृतवर्मा को मार दिया था इसलिए भोजों को गुस्सा आ गया और उन्होंने सात्यकी को घेर लिया और मद्य पात्रों से उस पर प्रहार किया।

यह देख प्रद्युम्न ने भोजों पर हमला किया। भोजों ने मिलकर सात्यकी और प्रद्युम्न को मार दिया।

कृष्ण ने गुस्से में मुट्ठी-भर घास खींची और वह लोहे की मूसल बन गई। उससे उसने सब प्रमुखों को मार दिया। उस घास को उखाड़कर, भोजों, अन्धक, शैनेय, वृष्णि आदि सब को यादव वंशवालों ने आपस में एक दूसरे को मार दिया। उनकी मुट्ठी में भी वह एक एक मूसल बन गई। खूब पी-पाकर बाप-बेटे ने एक दूसरे को खतम कर दिया। हाथ में मूसल लेकर कृष्ण उठा, उसने यादवों को भी मार दिया, जो मरने से बच गये थे। तब बभ्रु और दारुक ने कृष्ण के पास आकर कहा—"सबको आपने मार दिया है, अब बलराम जी को खोजा जाये।"

वे तीनों बलराम को खोजते निकले। उसको उन्होंने एक पेड़ के पास देखा। वह दुखी था। कृष्ण ने दारुक से कहा—"तुम तुरत हस्तिनापुर जाओ और यादवों के विनाश के बारे में बताओ। यह सुन अर्जुन जरूर आयेगा।" दारुक रथ लेकर निकल पड़ा। फिर कृष्ण ने बभ्रु से

कहा—"तुम जाकर स्त्रियों की रक्षा करो। नहीं तो गहनों के लिए चोर उनको तंग करेंगे।" वह कुछ ही दूर गया था कि उसके ऊपर भी मूसल गिरा और वह मर गया। तब कृष्ण ने बलराम से कहा—"भैय्या, मैं स्त्रियों को नगर पहुँचाता हूँ। तब तक तुम यहीं रहो।"

स्त्रियों को नगर में पहुँचाकर, उसने वसुदेव से कहा—"स्त्रियों की सावधानी से रक्षा करना। बलराम अर्जुन के आने की प्रतिक्षा करता वन में है। मैं भी वहीं जा रहा हूँ। इस नगर में जहाँ सब यादव मार दिये गये हों, वहाँ रहने को मेरा दिल नहीं चाहता। मैं और भाई वन में ही तपस्या करेंगे।" कहकर, उनको साष्टान्ग करके जल्दी ही चला गया। उसको जाता देख, स्त्रियों ने आर्तनाद किया। "तुम डरो मत। अर्जुन आ जायेगा।" कृष्ण कहकर, बलराम के पास गया।

बलराम योग समाधि में था। उसके मुँह से सफेद सर्प निकला और समुद्र में चला गया। इस प्रकार गये हुए आदिशेष वरुण लोक के नाग प्रमुखों ने पूजा की। बलराम को देह छोड़ता देख, कृष्ण निर्जन वन में कुछ देर घूमता रहा। फिर एक जगह लेटकर, उसने योग निद्रा ग्रहण की।

तब जर नाम का जंगली शिकार के लिए आया। उसे कृष्ण का पैर दिखाई दिया। उसे कोई पशु समझकर, उसने उस पर बाण मारा। जब उसे पता लगा कि वह मनुष्य था, वह कृष्ण के पैरों पर पड़ गया। कृष्ण जर एक आश्वासन देता मर गया। उसके शरीर से को तेज़ पुंज निकला और आकाश में चला गया। उसका देवता, अप्सराओं और मुनियों ने स्वागत किया।

[३२]

[मगरों की झील के पास श्वासकर्णी और विडाली के गिरोहवालों ने केशव और उसके साथियों की रक्षा की। और केशव अपने मित्रों के साथ गुहावासियों की मदद से पहाड़ की चोटी पर से एक घाटी में उतरा। वहाँ उनको एक भयंकर पक्षी को हाथ में पकड़कर चिल्लाता हुआ भूत भगानेवाले व्यक्ति की तरह एक व्यक्ति दिखाई दिया। बाद में :—]

घाटी में उतरते ही वह अद्भुत दृश्य देख केशव और उसके साथी चकित हो गये। जयमल्ल, ताकि भूत भगानेवाला, सामने डपली बजानेवाला या उसके साथी उसे न देखलें, एक पेड़ पर चढ़ गया। तुरत केशव और जंगली गोमान्ना भी पेड़ पर चढ़ गये। "ये कोई नर माँस भक्षक मालूम होते हैं। वह जो गण्डभैरण्ड को पकड़कर उछल कूद रहा है, हो न हो, उनका सरदार है। हम फिर किसी आफ़त में तो नहीं फँस गये हैं!" जयमल्ल ने कहा।

केशव जयमल्ल से कुछ कहनेवाला था कि भूत भगानेवाले ने जो तब तक चिल्ला रहा था, अपने साथियों की ओर मुड़कर ज़ोर से कहा—"हमारे कष्टों का कारण शत्रुओं का हमारे गंडभैरण्डों का चुरा ले

जाना है। उस पक्षी के मामा को हमें बचाना है। वह मामा हमारी रक्षा करेगा। क्या गण्डभेरण्ड की रक्षा करने का साहस तुममें है!"

इस प्रश्न का उत्तर उसके साथियों ने भाले उठाकर दिया—"हम जानते हैं कौन गण्डभेरण्ड पक्षियों को पकड़कर उनके पंख काटकर ले जा रहे हैं। आज से ये दुष्ट इस प्रान्त में पैर न रख सकेंगे। यह हमारी प्रतिज्ञा है।"

"तो चलो, रात और दिन की बिना परवाह किये, उस पक्षी के मामा के निवास स्थल, पर्वत प्रान्त को शत्रुओं से बचाओ।" कहकर भूत भगानेवाले ने अपने हाथ से गण्डभेरण्ड पक्षी को तुरत छोड़ दिया।

"तो यह बात है! गरुड़ के मुँहवाले सरदार के गिरोहवाले इस जगह के गण्डभेरण्ड पक्षियों को पकड़कर, उनके पंख काटकर ले जा रहे हैं।" जयमल्ल ने धीमे से कहा।

"उनकी इस करतूत की वजह से सम्भव है कि हम पर आपत्ति आये। यदि हम इस भूत भगानेवाले के साथियों की नज़र में पड़े, तो वे हमें पंखवाले मनुष्य समझकर हमें मारने का प्रयत्न करेंगे।" केशव ने कहा।

"कदम कदम पर हमारे लिए विघ्न हैं। यह भी सन्तोष न रहा कि हम भयंकर घाटी के पास पहुँच रहे हैं। इनसे बचकर पहाड़ में कैसे सुरंगवाला रास्ता जाना जाये!" जंगली गोमान्ना ने कहा।

जब वे पेड़ पर चढ़े ये सोच रहे थे तब भूत भगानेवाला अपने साथियों के साथ चला गया। वे कुछ देर तक पेड़ों पर ही रहे। जब वे जान गये कि आसपास

कोई न था, वे पेड़ों पर से धीमे धीमे उतर आये।

"फ़िलहाल, इस भूत भगानेवाले के गिरोह से हमें कोई डर नहीं है। अगर हमने श्वानकर्णी और बिड़ाली के बताये हुए सुरंग को मालूम कर लिया तो हम भयंकर घाटी में जा सकेंगे।" जंगली गोमान्न ने कहा।

यह सुन जयमल्ल ने हँसकर कहा—"ऐसी जगह, जहाँ इतने सारे पर्वत हैं, जंगल हैं वहाँ सुरंग का रास्ता ढूँढ निकालना आसान नहीं है। गोमान्न, जल्दबाज़ी से कोई फ़ायदा नहीं है। पहिले हमें यह देखना है कि यहाँ रहनेवाले हमें देख न पायें। हमें सावधान रहना होगा। यह बहुत ज़रूरी है। तुम यह अच्छी तरह जानलो।"

केशव ने चुपचाप थोड़ी दूर पेड़ों के पीछे चलकर, दूरी के पहाड़ों की ओर हाथ उठाकर ईशारा करते हुए कहा—"अगर हम बिना खतरे के उस जगह पहुँच सके तो वहाँ मालूम किया जा सकता है कि सुरंग कहाँ है। चुपचाप चले चलो।"
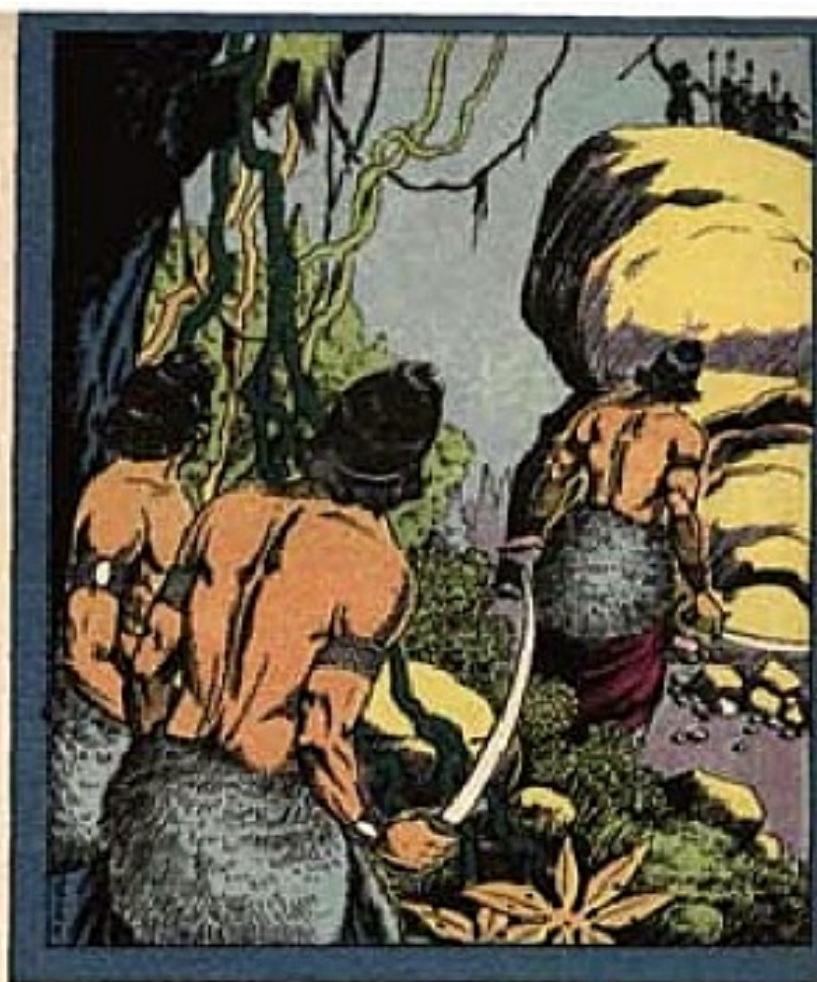
फिर वे दोनों कुछ दूर चलकर पर्वतों के पास पहुँचे। वह पहाड़ ऊँचा नीचा था, बड़े बड़े पत्थर थे। निर्जन था। यह जानकर कि वहाँ कोई भूत भगानेवाले के आदमी नहीं थे, केशव आदि पेड़ों के पीछे से आये और पर्वत के पास जाने लगे।

तुरत उनको सामने से एक ऊँची जगह से किसी का चिल्लाना सुनाई दिया। तीनों ने सिर उठाकर उस तरफ़ देखा। चार पाँच जंगली लोग भाले घुमाते चिल्लाये—"कौन हो तुम! पीछे चले जाओ। यदि एक कदम आगे रखा तो

प्राण नहीं बचेंगे। गण्डभेरुण्ड के पंख, अब तुम न काट सकोगे।"

तब जयमल्ल ने उनका जवाब देते हुए कहा—"हम गण्डभैरुण्ड के पंख काटने नहीं आये हैं। हमें, अपने रास्ते पर जाने दो।"

जयमल्ल अभी कह ही रहा था कि पहाड़ पर से बड़े बड़े पत्थर जोर से जहाँ वे खड़े थे, वहाँ लुढ़ककर आने लगे। जंगली गोमान्ग कुछ बोलनेवाला था कि जयमल्ल ने उसका हाथ पकड़कर पीछे खींचते हुए कहा—"चाहे तुम कुछ भी कहो, पर वे पत्थर बरसाकर ही उसका जवाब देंगे। उनकी चोट से बचने के लिए फ़िलहाल पीछे भाग जाना ही अच्छा है।"

जयमल्ल उसके पीछे केशव और उसके पीछे जंगली गोमान्ग भागे भागे एक पत्थर के पीछे गये और हाँफते हाँफते बैठ गये। थोड़ी देर कोई न बोला। उनको डर लगा कि कहीं ऐसा न हो कि भूत भगानेवाले के साथी उनका पीछा कर रहे हों, जब उन्होंने किसी को नहीं देखा, तो उन्होंने निश्चिन्तता की लम्बी साँस छोड़ी। "भयंकर घाटी में जाने के लिए सुरंग का मार्ग कहाँ है, मुझे मालूम हो गया है।" गोमान्ग ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा।

जयमल्ल ने मुस्कराते हुए कहा—"आश्चर्य न करो। श्वानकर्णी और बीड़ाली ने यही तो बताया था कि भयंकर घाटी, इन पहाड़ों के पीछे कहीं है। यानि ये दिखाई देनेवाले पहाड़ उस सुरंग के एक तरफ़ है। इस पर चढ़कर घाटी दिखाई दी और उसके आगे कोई और पहाड़ी दिखाई दी तो जाहिर है

कि बीचवाली घाटी, भयंकर घाटी है। समझे!"

"तो उनकी बताई हुई "एक न एक सुरंग" की बात क्या है!" जंगली गोमान्ना ने पूछा।

"एक न एक" कहने का मतलब यही है कि श्वानकर्णी और बीड़ाली इस प्रान्त के बारे में अधिक न जानते थे। क्योंकि वे कह रहे हैं कि कोई भी इस घाटी में आकर वापिस नहीं गया है। तो सुरंग की बात भी, सम्भव है, गढ़ी गढ़ाई हुई हो।"

"अगर यही बात है, तो जैसे भी हो, भूत भगानेवालों की नज़र बचाकर, उनके बताये हुए पहाड़ के पास जाना तुम्हारा उद्देश्य है, यही न?" केशव ने पूछा।

जयमल्ल ने सिर हिलाकर कहा—"अन्धेरा होने के बाद हमारा जाना अच्छा है। इस बीच यहीं ठहरा जाये। मेरा विश्वास है कि यहाँ शत्रुओं का कोई भय नहीं है। और अब जो खाना साथ लाये थे, उसे बाहर निकालो।

जंगली गोमान्ना ने बड़े बड़े सागून के पत्तों में बंधे हुए खाने को निकाल कर जयमल्ल और केशव के सामने रखा। सब खा पीकर सूर्यास्त होने तक वहीं रहे।

सूर्यास्त के बाद चन्द्रोदय प्रारम्भ हुआ। केशव और उसके मित्र पहाड़ पर चढ़ने का प्रयत्न करने लगे। जयमल्ल ने अपने साथियों की ओर मुड़कर कहा—"यह चान्दनी हमारे लिए और भूत भगानेवालों के लिए भी अनुकूल है। हम चूँकि नये हैं, हमें इससे, इस प्रान्त में रास्ता ढूँढ़ने में मदद मिलेगी। शत्रु भी हमारे बारे में आसानी से जान सकेंगे। इसलिए

जयमल्ल ने उसके मुख में हाथ रखकर उसका गला पीछे की ओर मोड़ा। परन्तु इस बीच भूत भगानेवाले का सेवक ज़ोर से चिल्लाया। तुरत पहाड़ पर शोर सुनाई दिया।

"अब देरी न करो हाथ पैर बाँध दो और मुख में पत्ते ठोंस दो। इसका चिल्लाना और पहाड़ पर इसके मित्रों का उसका सुनना, हमारे लिए उपयोगी नहीं है।" जयमल्ल ने कहा।

तुरत यह काम करके जब उन्होंने पहाड़ की ओर देखा, तो उस तरफ़ से भूत भगानेवाले के चार पाँच सेवक भागे भागे आ रहे थे।

"उस पहाड़ पर पहरा देनेवाले, अपने साथी की रक्षा के लिए इधर भागे भागे आ रहे हैं। अब हम बिना किसी रुकावट के पहाड़ पर पहुँच सकते हैं, दौड़ो।" कहकर केशव पहाड़ की ओर भागने लगा।

जैसा कि केशव का अनुमान था, पहाड़ की चोटी पर कोई शत्रु न था। जब उसने चोटी पर से, परली ओर देखा, तो वह चकित रह गया। वहाँ उसने एक चौड़ी घाटी देखी। विचित्र वृक्ष, उस पर

अर्थपाल

पुष्पपुर के मन्त्री, धर्मपाल के कामपाल नाम का लड़का था। उसने बड़ों की बात की परवाह न की और घूमता घामता काशी नगर पहुँचा। काशी के राजा, चण्डसिंह की कान्तिमति नाम की एक लड़की थी। एक दिन जब वह सहेलियों के साथ गेन्द खेल रही थी कामपाल ने उसको देखा और वह उस पर मुग्ध हो गया। उसने जैसे तैसे उसको अपना प्रेम जताया और चुपचाप उससे गन्धर्व विवाह भी कर लिया, कान्तिमति गर्भवती हुई और उसने एक लड़के को जन्म दिया।

ताकि उसके गुप्त विवाह के बारे में किसी को न मालूम हो जाये, इसलिए कान्तिमति ने अपने लड़के को, एक जँगली स्त्री को देकर, उसे श्मशान में छोड़ आने के लिए कहा। जब वह लड़के को श्मशान में छोड़कर आ रही थी, तो राज सैनिकों ने, उसको आधी रात के समय पकड़ लिया। उसने, प्राणों के डर से, राजकुमारी के रहस्य को उनको बता दिया। यही नहीं, राजोद्यान में सोये हुए कामपाल को भी उसने पकड़वा दिया। उसका सिर कटवाने के लिए, उसे जल्लादों के हाथ सौंप भी दिया गया।

इस बीच तारावली नाम की यक्षकन्या, मलयपर्वत से, अलकापुरी जा रही थी कि उसने काशी नगर के श्मशान में एक छोटे बच्चे का रोना सुना। उसने उस बच्चे को उठाकर, ले जाकर, अपने पिता कुबेर को दिखाया। कुबेर की आज्ञा पर उसने उस

लड़के को, मगधदेश की रानी वसुमति को, पालने पोसने के लिए दिया। तुरत, वह काशी के श्मशान के पास लौट आयी।

इधर, जल्लाद ने कामपाल को श्मशान ले जाकर, उसको मारने के लिए तलवार उठायी। इतने में कामपाल ने अपने हाथ छुड़ा लिये, जल्लाद के हाथ से तलवार छीनकर, उसी से जल्लाद को मारकर पास के जंगल में भाग गया। तब उसने एक पेड़ के नीचे, तारावली को बैठे देखा। उसने उसके बारे में मालूम कर लिया। तारावली ने उससे कहा—"कुबेर ने मुझे बताया है कि हम दोनों पिछले जन्म में पति पत्नी थे। उसकी आज्ञा के अनुसार मैंने तुम्हारे लड़के की रक्षा करके, उसको पालने के लिए वसुमति को दे दिया है।"

यह सुन कामपाल बड़ा खुश हुआ। उसको साथ ले जाकर, अपनी पत्नी बनाया। दो तीन दिन उसने खूब आनन्द किया। फिर उसने तारावली से कहा—"चण्डसिंह ने मुझे मारने का प्रयत्न किया। इसलिए मैं उससे बदला लेना चाहता हूँ।" यह सुन तारावली ने हँसकर कहा—"तो आधी रात के समय चला जाये, तब कान्तिमति को भी देखा जा सकता है।"

यक्ष के जादू के कारण, आधी रात के समय, कामपाल चण्डसिंह के शयनकक्ष में प्रवेश कर सका। राजा के सिर के समीप की तलवार लेकर, सोते राजा को उठाकर कहा—"मैं तुम्हारा दामाद हूँ। तुम्हारी अनुमति के बिना ही मैंने तुम्हारी लड़की से शादी की है। मुझे मारने की तुमने आज्ञा दी। अब मैं तुम्हें मारूँगा। अब क्या कहते हो?" कामपाल ने कहा।

चण्डसिंह ने कामपाल के पैर पकड़कर कहा—"इसमें तुम्हारी कोई गल्ती नहीं

है। मैने ही मूर्खतावश, तुम्हें मरवाने की आज्ञा दी थी। कल ही तुम दोनों का, सब के सामने विवाह कर दूँगा।" अगले दिन वैभव के साथ कान्तिमति और कामपाल का विवाह हो गया। उसके बाद, कामपाल चण्डसिंह का मन्त्री बना और अपनी दोनों पत्नियों, कान्तिमति और तारावली के साथ सुख से रहने लगा।

एक बार एक विचित्र बात हुई। कामपाल ने उसको अपनी आँखों देखा। काशी नगर में पूर्णभद्र नाम का एक युवक था। वह चोरियाँ वगैरह करने लगा था। वह चोरी करने एक बनिये के घर घुसा और घर के मालिक द्वारा पकड़ा गया। राजसैनिक जब पूर्णभद्र को पकड़कर ले आ रहे थे, तो मृत्युविजय नाम का मदमत्त हाथी उसकी ओर आया। पूर्णभद्र को तो फाँसी की सजा होनी थी ही, इसलिए वह हाथी से डरा नहीं। हाथी ने उसे दान्तों से भोंकना चाहा। पूर्णभद्र ने जब लाठी से उसको मारा, तो वह डरकर पीछे चला गया।

वह देख महावत को गुस्सा आ गया। वह हाथी को अंकुश से उकसाता, फिर पूर्णभद्र की ओर ले गया। वह चोट

खाकर पीछे भाग आया। पूर्णभद्र उसके पीछे दौड़ा। महावत से उसने कहा—"क्यों, इसे तंग करते हो! एक और हाथी को पकड़ लाओ।"

कामपाल यह सब देख रहा था, उसने पूर्णभद्र को बुलाकर कहा—"तुमने मृत्युविजय को ही डरा दिया। इस बार तुम्हारे अपराध को माफ़ कर देता हूँ। आइन्दा सम्भलकर रहना।" तब से उन दोनों में अच्छी मैत्री हो गई।

कुछ दिन के बाद चण्डसिंह गुज़र गया। उसका बड़ा लड़का चण्डघोष, क्षय
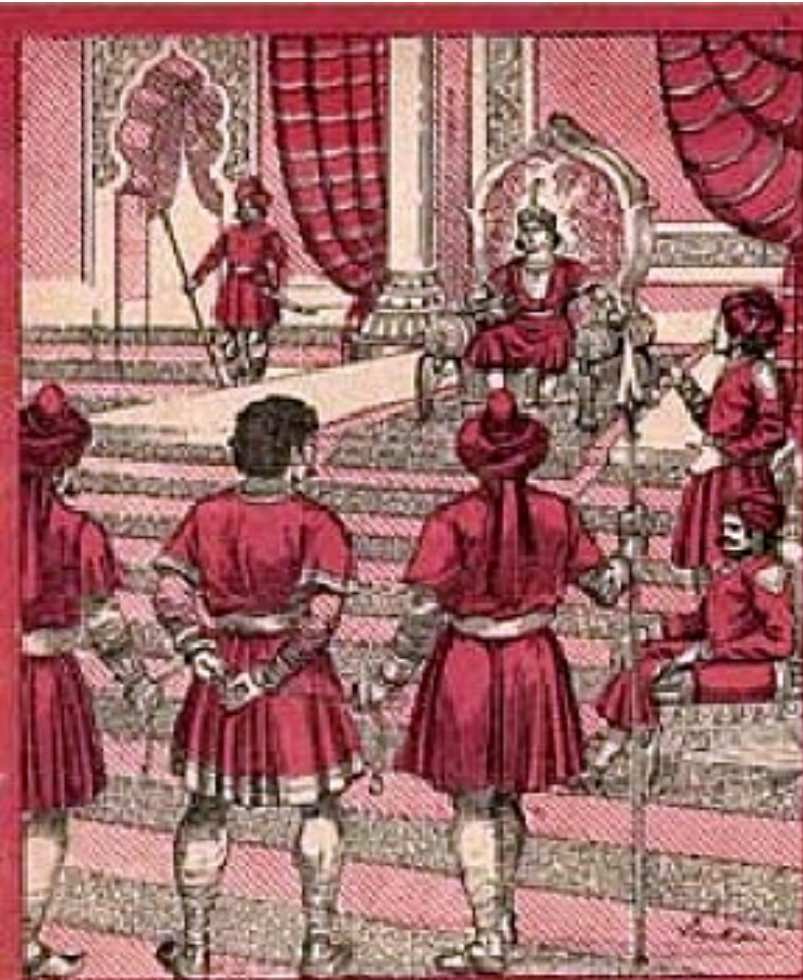
के कारण पहिले ही मर चुका था। राज्य का उत्तराधिकार, पाँच साल के सिंहघोष को मिला। कामपाल ने उसका ही राज्याभिषेक करवाया और स्वयं राज्य भार उठाता रहा।

कामपाल होने को तो मन्त्री ही था, पर वह राजा का जीजा भी था। पोषक भी। यह कई राज-कर्मचारियों को पसन्द न आया। राजा के छोटे होने के कारण उनको कोई फायदा न हुआ। इसलिए वे सिंहघोष के कान भरने लगे।

"यह कामपाल क्या मामूली आदमी है! आपकी बहिन से उसने चोरी चोरी शादी कर ली। जब पूछा गया कि ऐसा क्यों किया, तो उसने आपके पिता को तलवार दिखाई। सौभाग्यवश आपके पिता ऐन मौके पर उठ गये। कहीं ऐसा न हो कि वह उन्हें मार दे, उन्होंने इनकी शादी कर दी। आपके भाई को भी इन्होंने विष देकर मरवा दिया। आप छोटे हैं, इसलिए आपको छोड़ दिया। पर जब वे जान जायेंगे कि आपसे उनको खतरा है, तो वे आपको भी तुरत मरवा देंगे।" उन्होंने कहा।

ये बातें सिंहघोष के मन में घर कर गईं। परन्तु यक्षिणी तारावली के शक्ति से भयभीत होकर उसने कामपाल को मरवाना न चाहा। इस बीच तारावली और कामपाल में कोई झगड़ा हुआ, कामपाल के बहुत मनाने पर भी, वह उसको छोड़कर कहीं चली गई। कामपाल बड़ा दुखी था। जैसे तैसे राजकार्य निभा रहा था। उसी समय सिंहघोष ने कामपाल को पकड़वाया और यह घोषित कर दिया कि वह राजद्रोही था और आज्ञा दे दी कि उसकी आँखें निकलवा दी जायें।

कई लोगों ने इसको अन्याय समझा, क्योंकि प्रजा को, कामपाल पर अभिमान और आदर था। पूर्णभद्र, जो उसका मित्र था यह सह न सका। इससे पहिले कि कामपाल को दण्ड मिले, वह आत्महत्या कर लेना चाहता था। इसलिए वह शहर से बाहर गया। वहाँ उसे एक युवक दिखाई दिया। उसने उससे पूछा—"तुम क्यों दुखी हो?"

वह लड़का कामपाल का लड़का अर्थपाल ही था। वह मगध की रानी, वसुमति द्वारा पाला गया था। सयाना होकर, वह देश में घूमता घामता काशी पहुँचा था। उसने पूर्णभद्र का कहना सुनकर अपने पिता की दुस्थिति पर आँसू बहाते हुए कहा—"मैं कोई पराया नहीं हूँ। मैं वही हूँ जिसके पिता माता कामपाल और कान्तिमति हैं और जिसे तारावली ने वसुमति को पालने के लिए दिया था। मैं अपने पिता की रक्षा करूँगा। इसके लिए शत्रु से, चाहे वे कितने भी हों, युद्ध करूँगा।"

वह यह कह रहा था कि पास की बाम्बी से एक बड़े साँप ने अपना फण ऊपर उठाया। अर्थपाल ने मन्त्र बल से
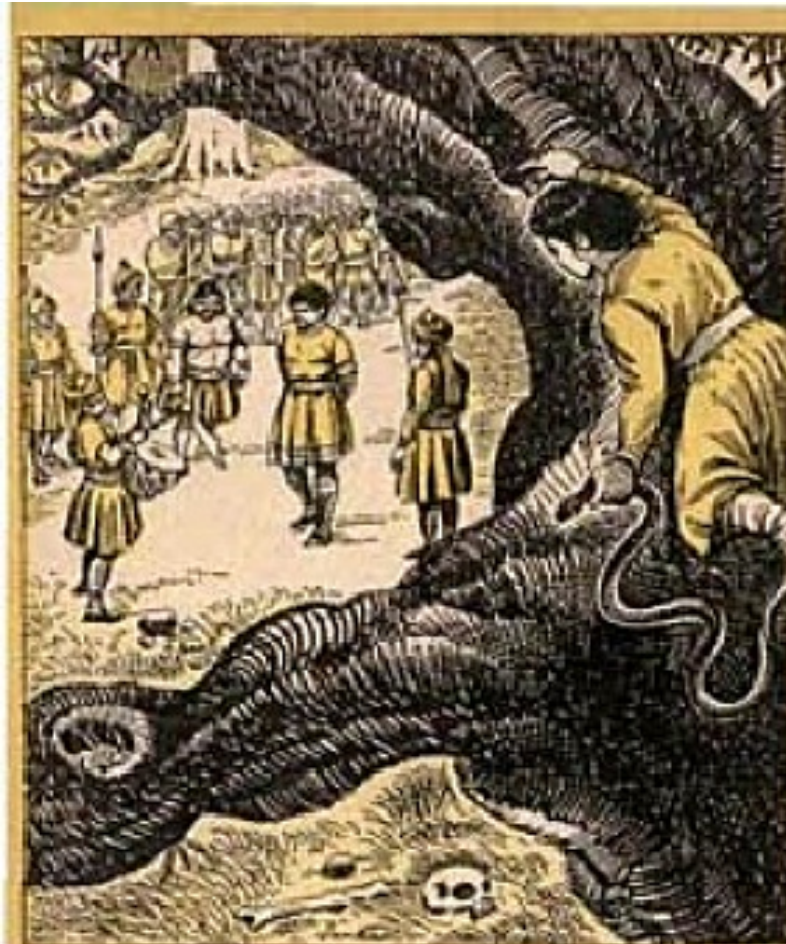
उस साँप को पकड़ लिया। और उसे पूर्णभद्र को देते हुए कहा—"अच्छा उपाय सूझा है। भीड़ में जाकर मैं इस साँप को अपने पिता पर फेंकूँगा। इसके काटने पर मेरे पिता गिर जायेंगे। मैं मन्त्रशक्ति से उसके विष का संचार रोक दूँगा। मैं उनके प्राणों को क्षीण न होने दूँगा। सब सोचेंगे कि वे मर गये हैं। आप मेरी माँ के पास जाकर कहिये कि मैं आ गया हूँ और मैं यूँ करने जा रहा हूँ। उन्हें अपने भाई की आज्ञा पर, सती होने के लिए, तैयार रहने के लिए कहिये। मैं आकर अपने पिता को जिला दूँगा। फिर जो कुछ करना होगा। वे खुद करवा देंगे।"

यह सुन पूर्णभद्र बड़ा सन्तुष्ट हुआ। वह सीधे कान्तिमति के पास गया। जो कुछ अर्थपाल ने बताया था, उससे कहा। अर्थपाल, नगर के वधस्थल में गया। वहाँ एक बड़े पेड़ पर साँप को लेकर चढ़ बैठा।

कामपाल को जब दन्ड दिया जाना था, उस समय बहुत से लोग वहाँ जमा हो गये और तरह तरह की बातें करने लगे। थोड़ी देर में कामपाल को हाथ बाँधकर लाया गया। एक चन्डाल ने जोर से चिल्लाते हुए घोषित किया। "यह कामपाल मन्त्री है। राज्य हथियाने के लिए इसने राजा चण्डसिंह और युवराज, चण्डघोष को मरवाया। जब यह महाराज सिंहघोष को भी मरवाने की सोच रहा था, तो दूसरे राजभक्त मन्त्रियों ने इसको पकड़ लिया। इस राजद्रोही की आँखें निकाली जा रही हैं। जो कोई राजद्रोह की सोचता है उनको यही सजा मिलती है।"

यह घोषणा सुन लोगों में हाहाकार मच गया। उस हो हल्ले में अर्थपाल ने साँप को अपने पिता पर छोड़ दिया। जब

[illegible] हुआ था, जो जल्दी में उसको रास्ता दिया। इस बीच अर्थपाल पेड़ पर से उतरा, अपने पिता के पास जाकर, मन्त्रशक्ति से उसने साँप के विष को रोक दिया। पर कामपाल इस तरह पड़ा रहा जैसे वह साँप के काटे से मर गया हो।

"राजद्रोही को यदि राजा ने न मरवाया, तो क्या भगवान उसे छोड़ेंगे? अब तो मर ही गया है। अब आँखें निकलवाने से भी क्या फायदा? और न निकालने से क्या नुकसान?" अर्थपाल ने आस पास खड़े लोगों से कहा।

ये बातें कान्तिमति को पता लगीं। चूँकि उसको पहिले ही मालूम था कि क्या होने जा रहा था इसलिए वह ज्यादह दुखी न हुई। उसके सिर को अपनी गोद में रखकर उसने भाई के पास सती होने की अनुमति देने के लिए खबर भिजवाई। उसने इस के लिए अनुमति दे दी।

कामपाल को, कई मन्त्र वैद्यों ने जिलाने की कोशिश की, पर वे सफल न हुये। कान्तिमति, कामपाल को अपने घर ले गई। उसको दर्भासन पर लिटाकर, जो कुछ सती होने के लिए करना था, उसकी उसने व्यवस्था की। उसने फिर सबको भेज दिया और पास खड़े अर्थपाल से कहा—"बेटा! अब तुम अपने पिता को जिलाओ।"

अर्थपाल की मन्त्रशक्ति के कारण कामपाल उठ बैठा। तब अर्थपाल ने अपने पिता से अपनी सारी बात कही।

"अब क्या किया जाय?" उसने पूछा।

"हमारा घर, किले की तरह है। हम यहाँ कुछ समय तक बिना किसी को पता लगे रह सकते हैं। ऐसे

बहुत से लोग हैं, जिनको मुझ पर अभिमान है, जिनका मुझ से लाभ हुआ है। हमारे पास हथियारों की भी कमी नहीं है। यदि हमने लोगों को राजा के विरुद्ध धीमे धीमे उकसाया, तो हम उससे बदला ले सकेंगे।" कामपाल ने कहा।

कामपाल और अर्थपाल इस प्रयत्न में थे कि राजा सिंहघोष को यह मालूम हो गया। उसने पिता और पुत्र को मरवाने के बहुत प्रयत्न किये, पर वह सफल न हुआ।

एक दिन अर्थपाल ने पूर्णभद्र से राजमहल के बारे में सब कुछ मालूम किया। यह भी मालूम किया कि राजा के सोने की जगह कहाँ थी। उसने उसके कमरे तक भूमि में सुरंग बनाई और उसको जंजीरों में बाँधकर ले आया। सिंहघोष अपने जीजा और बहिन को देख, इतना शर्मिन्दा हुआ कि वह कुछ कह न सका। उसको उन्होंने कैद की सजा दी। राज्य कामपाल के हाथ आया, और फिर अर्थपाल को मिला।

अर्थपाल को पत्नी भी मिली। कामपाल का बड़ा साला, जब क्षय से गुज़रा था, तब उसकी पत्नी गर्भवती थी। उसके मरने के बाद उसकी पत्नी ने एक लड़की को जन्म दिया। जिसका नाम मणिकर्णिका था। तब कान्तिमति का पिता, चण्डसिंह जीवित ही था। चूँकि उसे कान्तिमति का अनुभव था, इसलिए उसने उसको कहीं घूमने फिरने न दिया। उसको राजमहल में ही पाला पोसा गया था। अब मणिकर्णिका सयानी हो गई थी। अपने मामा की लड़की, मणिकर्णिका से अर्थपाल ने विवाह कर लिया।

विचित्र बाँसुरी

एक गरीब के एक ही लड़का था और वह बड़ा दुर्बल था। कुछ कामकाज भी न कर पाता था। उसका नाम आनन्द था। पिता आनन्द को बहुत दिन खुद मेहनत करके ही पालता-पोसता आया। परन्तु आखिर इतनी गरीबी झेलनी पड़ी कि माँड तक मिलना मुश्किल हो गया। इसलिए आनन्द को कहीं काम पर लगाने के लिए साथ वह निकल पड़ा।

परन्तु आनन्द को काम देने के लिए कोई न माना। आखिर आनन्द का पिता उसको ग्रामाधिकारी के पास ले गया। ग्रामाधिकारी ने उसको काम पर ले लिया। सच कहा जाय, तो ग्रामाधिकारी बड़ा क्रूर था। उसके यहाँ कोई काम पर न आता, अगर कोई आता भी तो, ज्यादह दिन न टिकता। खाली बैठने से, तो यही अच्छा था कि आनन्द उसके यहाँ ही काम करे। उसके पिता ने सोचा। कुछ मिले या न मिले, खाने को तो थोड़ा बहुत मिल ही जायेगा। वेतन और कपड़े आदि के बारे में बिना कुछ कहे ही ग्रामाधिकारी ने उसको काम पर ले लिया।

तीन साल काम करके आनन्द जा रहा था। ग्रामाधिकारी ने उसके हाथ में तीन रुपये रखते हुए कहा—"एक साल का एक रुपया दे रहा हूँ। अब जाओ।"

"जिन कपड़ों में आया था, क्या उन्हीं में भेजेंगे?" आनन्द ने पूछा।

"कपड़े देने की बात तो पहिले नहीं हुई थी। पैसा दे दिया है, यही काफ़ी है।" ग्रामाधिकारी ने कहा।

आनन्द उन तीन रुपयों से कपड़े खरीदने के लिए कस्बे की ओर चला। कस्बा जाने के लिए पहाड़ों के बीच में से, घाटी में से रास्ता जाता था। वह कुछ दूर ही गया था कि एक मोड़ पर उसको एक भिखारी दिखाई दिया। वह भिखारी इतना लम्बा था कि उसे देख, आनन्द डर के मारे चिल्लाया। "डरो मत! मैं तुम्हारा कुछ न बिगाड़ूँगा। मुझे बस एक रुपया दे दो।" भिखारी ने कहा।

"मेरे पास हैं ही तीन रुपये। इनसे कपड़े खरीदने हैं।" आनन्द ने कहा।

"तीन रुपये हैं न! तुम दो रख लो और एक मुझे दे दो।" भिखारी ने कहा।

आनन्द भिखारी को एक रुपया देकर आगे बढ़ा। कुछ दूर जाने के बाद, उसे एक और मोड़ पर एक और भिखारी दिखाई दिया। वह पहिले भिखारी से भी लम्बा था। इस भिखारी ने भी पहिले भिखारी की तरह आनन्द से एक रुपया लिया।

घाटी के अन्त में आनन्द को तीसरा भिखारी दिखाई दिया। वह पिछले दो भिखारियों से भी लम्बा था, जब तक आनन्द ने बचा रुपया, उसे दे न दिया, उसने उसको न छोड़ा।

रुपया लेकर भिखारी तुरत न गया। उसने कहा—"जो तुम्हारे पास तीन रुपये थे, उन्हें तुमने भिखारियों को दे दिया। एक एक रुपये के लिए, एक एक वर माँगो।"

आनन्द ने कुछ देर सोचकर कहा—"कहते हैं, कृष्ण के बाँसुरी बजाते ही गोपियाँ और गोप नृत्य में तन्मय हो जाते थे। एक ऐसी बाँसुरी दो, जिसे सुनकर, लोग सुधबुध खोकर नाचना शुरु कर दें।"

"इस बार इससे भी अच्छा वर माँगो।" भिखारी ने कहा।

"ऐसी गुलेल दो, जो दूरी पर की चीज़ को निशाना मार दो।" आनन्द ने कहा।

"क्या चीज़ें माँग रहे हो?" कोई ऐसी चीज़ माँगो, जो सचमुच काम में आये। एक ही वर बाकी रह गया है।" भिखारी ने कहा।

"जिस किसी से मैं जो कुछ माँगूँ, उसे तुरत मुझे वह देना होगा।" आनन्द ने कहा।

"इस बार तो तुमने अच्छा वर माँगा है। ये तीनों इच्छायें तुम्हारी पूरी होंगी।" भिखारी यह कहकर चला गया।

आनन्द पहाड़ पर ही एक जगह सो गया और जब वह सोकर उठा, तो उसकी बगल में एक बाँसुरी और एक गुलेल थी। वह उन्हें लेकर, खुशी खुशी कस्बे में पहुँचा। वह वहाँ दुकानों में गया और जो कुछ उसे चाहिए था, उसे माँग कर उसने ले लिया। उसके माँगते ही बड़े से बड़े कंजूस ने भी उसने जो कुछ माँगा था, वह दे दिया। वह घोड़े पर सवार होकर, गाँव पहुँचा।

वहाँ, उसे ग्रामाधिकारी दिखाई दिया। आनन्द के घोड़े को रोककर उसने कहा—"नमस्कार...."

ग्रामाधिकारी उसे देख चकित हो गया। "अरे, तुम भी बड़े आदमी हो गये!"

"भाग्य ने साथ दिया है, और कुछ नहीं।" आनन्द ने कहा।

"अरे, हाथ में बाँसुरी भी पकड़ रखी है। क्यों, काम धाम छोड़कर, संगीतज्ञ होने की सोच रहे हो?" ग्रामाधिकारी ने ताना कसा।

"इसमें क्या है? इस बाँसुरी से यह गुलेल अच्छी है। इससे दूरी की चीज़ भी

आसानी से मार सकता हूँ। दूरी के ताड़ वृक्ष पर बैठे पक्षी को मार सकता हूँ।" आनन्द ने कहा।

"जा, तेरा सिर!" ग्रामाधिकारी ने कहा।

"तो लगाइये बाज़ी...." आनन्द ने कहा।

"अगर तुमने उस पक्षी को मारा तो मैं अपनी सारी ज़मीन दे दूँगा। मेरे पास जितना नगद रुपया है, वह सब दे दूँगा। और चाहो तो उस पक्षी को स्वयं मैं लाकर दूँगा। अगर यह सब तभी न, जब तुम पक्षी को मार दोगे।" ग्रामाधिकारी ने कहा।

आनन्द ने गुलेल से उस पक्षी को मार दिया। वह ताड़ के चारों ओर के काँटों में गिर गया। ग्रामाधिकारी को उसे लाने के लिए काँटों में जाना पड़ा। जब, वह उसे लाने काँटों में गया, उसे काँटे चुभने लगे। तभी आनन्द बाँसुरी बजाने लगा। तुरत ग्रामाधिकारी नाचने लगा।

थोड़ी देर में ग्रामाधिकारी का शरीर खून से लथपथ हो गया। कपड़े, चीथड़े हो गये। थोड़ी देर में आनन्द ने बाँसुरी बजाना छोड़ दिया। काँटों में से निकले ग्रामाधिकारी को देखकर कहा—"जब मैंने तुम्हारी नौकरी छोड़ी थी, तब मेरे कपड़े भी ऐसे ही थे।"

चूँकि ग्रामाधिकारी बाजी हार गया था, इसलिए उसे आनन्द को अपना सब कुछ देना पड़ गया। उस धन को लेकर आनन्द कस्बे में गया और वहाँ आराम से रहने लगा।

असली कीमत

किसी समय एक गाँव में एक मछियारा था। एक दिन उसके जाल में एक मछली फँसी। उसने मछली ले जाकर, अपनी पत्नी को पकाने के लिए दी। उसने मछली काटी, तो गोली जितना बड़ा हीरा उसमें से निकला।

"उस मछली को न बनाओ। उसको वैसे ही नमक में डालकर रखो। मैं इसे शहर में बेचकर हज़ारों रुपया पाऊँगा। फिर हम आराम से रह सकेंगे।" पत्नी से यह कहकर, मछियारा शहर की ओर निकला।

पर रास्ते में उसे एक सन्देह हुआ। उसे बेचना आसान काम न था। जौहरी उसकी सच्ची कीमत नहीं देंगे। यदि उसने कुछ ज्यादह भाव सौदा किया, तो वे सिपाहियों को बुलायेंगे। हज़ार रुपये, तो आने से रहे, उसे हवालात की हवा भी खानी पड़ेगी। इसलिए उस मछियारे ने उस हीरे को ले जाकर, राजा को भेंट करने का निश्चय किया। और जो कुछ देंगे, वह ले लूँगा, यह निश्चय करके, वह सीधे राजमहल में गया। उसे वहाँ द्वारपालकों ने रोका, अन्दर नहीं आने दिया—"तुम्हें महल में क्या काम है?"

"राजा के दर्शन करने हैं।" मछियारे ने कहा।

द्वारपालक ने हँसकर कहा—"राजा तुम्हें क्या दर्शन देंगे?"

मछियारा बड़ा दुःखी हुआ। "मुझे जैसे भी हो, राजा को देखना है। मैं उनसे कुछ नहीं चाहता। मैं उन्हें एक चीज़ देकर चला जाऊँगा।" उसने कहा।

कपिल

द्वारपालक ने जानना चाहा कि आखिर उसका काम था क्या ? उसने मछियारे से पूछा—"अगर मैंने तुमको अन्दर जाने दिया, तो मुझे फाँसी दे दी जायेगी। जो कुछ तुम राजा को देना चाहते हो, मुझे दे दो, मैं राजा तक पहुँचा दूँगा।"

मछियारा और करता भी तो क्या करता, उसने हीरा द्वारपालक को दिखाया। द्वारपालक एक और सिपाही को अपनी जगह नियुक्त करके चला गया।

थोड़ी देर बाद, वह कुछ कपड़े लेकर आया—"राजा को मैंने तुम्हारा हीरा दे दिया है। उन्होंने तुम्हारे लिए ये कपड़े भिजवाये हैं।"

मछियारा बड़ा निराश हुआ। "क्या राजा ने बस इतना ही ईनाम दिया है ? और कुछ नहीं दिया ?" मछियारे ने उससे पूछा।

"लो, क्या तुमने सोचा था कि जो तुमने शीशे का टुकड़ा दिया था, उसके लिए तुम्हें कपड़े न देकर, क्या आधा राज्य देते ? जा बे जा।" द्वारपालक ने मछियारे को डाँटा धमका। मछियारे दुखी हो घर की ओर चल पड़ा।

परन्तु द्वारपालक ने हीरा, राजा को नहीं दिया। वह अगले दिन एक बड़े जौहरी के पास गया। मछियारे के लाये हुए हीरे को दिखाकर उसने पूछा—"क्या खरीदोगे ? कितने में खरीदोगे ?" जौहरी ने उस हीरे को जाँच जूँचकर यह जानकर कि हीरा बड़ा कीमती था, द्वारपालक से पूछा—"यह तुम्हारे पास कहाँ से आया ?"

"मेरा एक सम्बन्धी, समुद्र में व्यापार करता है। उसने मेरे कर्ज के बदले यह हीरा भेजा है।" द्वारपालक ने कहा।

जौहरी ने कहा कि वह पाँच हजार रुपये देगा। द्वारपालक ने सौदा किया।

फिर जौहरी ने कहा—"दस हज़ार दूँगा। चाहो तो बेचो, नहीं तो किसी और को बेच देना। बस इससे ज़्यादह नहीं दूँगा।" द्वारपाल ने जौहरी को हीरा दे दिया। दस हज़ार रुपये लेकर वह चला गया।

अब जौहरी के सामने यह समस्या थी कि कौन पचीस हज़ार रुपये के हीरे को खरीदेगा। उसने उसे बेचने के लिए राजा को दिखाया। राजा ने उसको अपने पारखियों को दिखाया। उन्होंने कहा कि उसकी कीमत कम से कम तीस हज़ार रुपये होगी।

राजा उस हीरे को परखने के लिए अपने महल के अन्दर के कमरे में गया। वहाँ एक देवी की मूर्ति थी। राजा जब कोई कीमती चीज़ खरीदता, तो उस देवी की सम्मति लिया करता और वह देवी, कोई न कोई संकेत दिखाकर, अपनी सम्मति प्रकट करती।

इस बार भी राजा, उस हीरे को देवी के पास ले गया। उसको देवी के हाथ में रखकर वह आँख बन्द करके, ध्यान करने लगा। तुरत हीरे के गिरने की ध्वनि हुई। राजा ने फिर दो बार उसके हाथ में हीरा रखा और ध्यान किया, पर दोनों बार वह गिर गया।

राजा हीरा लेकर फिर जौहरी के पास आया। "यह अच्छा हीरा है, पारखी बता रहे हैं। परन्तु इसके खरीदने बेचने में कहीं कोई अन्याय हुआ है। यह बताओ तुम्हारे पास यह कैसे आया! कितने में तुमने इसको खरीदा!"

"महाराज! मैं सच नहीं छुपाना चाहता। मैंने इसे दस हज़ार रुपये में खरीदा है। इसकी कीमत इससे अधिक है। कम दाम पर खरीदकर अधिक दाम

पर बेचना हम लोगों का पेशा ही है।" जौहरी ने कहा। "पर इसे तुमको किसने बेचा?" राजा ने पूछा।

"आपके महल के द्वारपालक ने!" जौहरी ने कहा।

राजा ने द्वारपालक को बुलाकर कहा— "तुमने जौहरी को यह हीरा बेचा है, यह तुम्हारे पास कैसे आया?"

"महाराज, माफ़ी चाहता हूँ। एक मछियारे ने मुझे यह लाकर दिया और जोड़ी धोती इसके बदले लेकर चला गया।" द्वारपालक ने कहा।

"कौन है वह मछियारा? उसका क्या नाम है?" राजा ने फिर पूछा। द्वारपालक ने कहा कि वह यह न जानता था।

राजा ने अगले दिन घोषणा करवाई कि सब मछियारे उसके सामने हाज़िर किये जायें। मछियारे आये। राजा, मन्त्री, जौहरी और द्वारपालक को साथ लेकर उनकी जगह गया। द्वारपालक और मछियारे ने एक दूसरे को पहिचाना।

राजा की ओर से मन्त्री ने मछियारे से पूछ ताछ कर हीरे के बारे में मालूम कर लिया। घर जाकर वह मछली के टुकड़े भी ले आया। उसने वह जगह भी दिखाई, जहाँ वह हीरा था।

राजा ने तुरत द्वारपालक को जेल की सज़ा दी। जौहरी को उसने दस हज़ार रुपये दिलवाये, ताकि उसका नुक्सान न हो और हीरे की असली कीमत पचीस हज़ार, मछियारे को दे दी। इतना सब कुछ हो जाने के बाद मछियारे की इच्छा पूरी हुई। वह उस धन को लेकर, पत्नी के साथ आराम से जीने लगा।

निरुपयोगी साधन

एक खरगोश ने एक पत्थर के पास आकर कहा—"सुनता हूँ, तुम दान्त बड़े अच्छे बनाते हो, हमें दो दान्त तो बनाकर दो।"

"तुम्हारे दान्त तो ठीक हैं!" पत्थर ने कहा।

"यह नहीं कि अच्छे नहीं हैं। मुझे कुछ और बड़े दान्त चाहिए, शेर के समान बड़े।" खरगोश ने कहा। "क्यों?" पत्थर ने पूछा।

"लोमड़ी को डराने के लिए। उससे बड़ा तंग आया हुआ हूँ। उसे देखते ही भागने को जी चाहता है। इस बार वह ही मुझे देखकर भागेगा।" खरगोश ने कहा। पत्थर मन ही मन हँसा और उसने उसके भयंकर दान्त लगा दिये।

खरगोश ने शीशे में देखकर कहा—"गजब! अब लूँगा इस लोमड़ी की खबर।" वह लोमड़ी को खोजता निकला। वह अभी बहुत दूर न गया था कि उसे पास में ही एक झाड़ी में लोमड़ी दिखाई दी। खरगोश डर गया भागा-भागा पत्थर के पास आया। "अरे भाई, इन दान्तों को ले लो। इससे भयंकर दान्त लगा सकते हो?" उसने पूछा।

"दान्त नहीं बदलने होंगे। तुम्हारा बुजदिल दिल बदलना होगा। जब तक दिल नहीं बदल दिया जायेगा, तब तक तुम्हारी समस्या नहीं सुलझेगी।" पत्थर ने कहा।

विचित्र इच्छा

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया, पेड़ पर से शव को उतार कर, कन्धे पर डाल हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"न मालूम तुम्हारा क्या उद्देश्य है? बहुत सोचने पर भी मैं कुछ समझ नहीं पाता हूँ। तुम्हें देखकर मुझे खाण्डिक्य याद आ रहा है। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, मैं उसकी कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यों कहानी शुरु की।

जनक महाराजा के वंश में अमितध्वज नाम का राजा था। उसके दो लड़के थे कृतध्वज और खाण्डिक्य। वे अपने पिता के राज्य का विभाजन करके राज्य कर रहे थे। कृतध्वज के केशीध्वज नाम का लड़का था। जब वह गद्दी पर आया, तो उसने खाण्डिक्य

बेताल कथाएँ

का भी हथिया लिया। राज्यच्युत खाण्डिक्य अपने मन्त्री पुरोहित आदि के साथ वनों में जाकर रहने लगा।

केशीध्वज योग विद्या जानता था। उसने बहुत-से यज्ञ किये। जब वह एक दिन योग समाधि में था, तो एक शेर उसकी यज्ञधेनु को खा गया। इसका प्रायश्चित्त क्या था, इसके बारे में उसने यज्ञ करानेवालों से पूछा।

"इस बारे में हम निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकते। कशेर मुनि से यदि पूछा गया, तो वे बता सकेंगे।" यज्ञ करानेवालों ने बताया।

राजा कशेर महामुनि के पास गया। "स्वामी, मेरी यज्ञधेनु को शेर खा गया है। इसके लिए क्या प्रायश्चित्त किया जाय?" उसने पूछा।

"मैं इस विषय में कुछ नहीं जानता। शुनक नाम के एक मुनि हैं, वे बता सकेंगे कि आपको क्या प्रायश्चित्त करना है।" कशेर महामुनि ने कहा।

केशीध्वज शुनक महामुनि के पास गया और जो कुछ हुआ था, उसे बताकर, उसने पूछा कि उसको क्या प्रायश्चित्त करना

होगा। शुनक ने कहा—"राजा, मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता, न कशेर ही कुछ कह सकते हैं। इस बारे में केवल एक ही बता सकता है और वह है खाण्डिक्य।"

केशीध्वज के सामने बड़ी समस्या पैदा हुई। जिसको हराकर उसने उसका राज्य लिया था, उसके पास कैसे जाया जाये? क्या पूछने पर वह बतायेगा? कुछ देर वह इन प्रश्नों के बारे में सोचता रहा, फिर उसने खाण्डिक्य के पास जाने का निश्चय किया। "यदि मुझे देखते ही शत्रुता के

कारण खाण्डिक्य ने मुझे मार दिया, तो मुझे यज्ञ का फल मिलेगा। क्योंकि मैं इस समय यज्ञ के काम पर हूँ और यदि उसने प्रायश्चित्त के बारे में बताया, तो यज्ञ निर्विघ्न चलता रहेगा और उस तरह भी मुझे यज्ञ का फल मिलेगा। इसलिए उसके पास जाने से मेरी कोई हानि न होगी।" केशीध्वज ने सोचा।

वह अपने रथ पर सवार होकर, वन में खाण्डिक्य के पास गया। खाण्डिक्य को उसे देखते ही बहुत क्रोध आ गया। "अरे, अब भी तुम्हारी दुष्ट बुद्धि नहीं गई। मुझे मारने के लिए यहाँ भी आये हो! फिर यह छद्म वेश क्या है! तुम सचमुच मृग चर्म पहिने शेर हो। व्यर्थ मुझसे युद्ध करके मेरे राज्य का अपहरण कर लिया। उससे सन्तुष्ट न होकर अब मेरे प्राण लेने आये हो। जिसने मेरे राज्य का अपहरण किया है, उसे मुझे क्यों नहीं मारना चाहिए! अभी मैं तुम्हें अपने बाणों से मार देता हूँ!"

यह सुन केशीध्वज ने खाण्डिक्य को नमस्कार करके कहा—"मैं तुमको मारने नहीं आया हूँ। एक धर्म सन्देह का निवारण करने आया हूँ। तुम सन्देह निवारण करोगे या मुझे मार दोगे, यह तुम ही सोच लो। मैं दोनों के लिए तैयार हूँ।"

केशीध्वज के यह कहने पर खाण्डिक्य ने चुपचाप मन्त्री और पुरोहितों से परामर्श किया। "यह आपका प्रबल शत्रु है। इसको मारकर आप निर्विघ्न सारे देश पर राज्य कर सकते हैं।" उन्होंने सलाह दी।

"पर खाण्डिक्य को यह सलाह जंची नहीं। यह यज्ञ दीक्षा में है, यदि मैंने इस समय इसको मार दिया, तो यह हमेशा के लिए परलोक के सुखों का अधिकारी होगा।

यदि जीवित छोड़ दिया गया तो इहलोक के सुखों के सिवाय इसे कुछ न मिलेगा। इसलिए मैं इसको नहीं मारूँगा।" उसने कहा।

उसने केशीध्वज के पास आकर कहा—"तुम किस धर्म सन्देह के लिए आये हो, बताओ।" केशीध्वज ने पूछा, उसको क्या प्रायश्चित करना होगा। खाण्डिक्य ने प्रायश्चित्त की विधि उसको बताकर उसे भेज दिया।

केशीध्वज अपनी जगह आया। प्रायश्चित्त करके, यज्ञ सफलता पूर्वक सम्पन्न करके, उसने पुरोहितों की पूजा की। पर केशीध्वज को यह अखरता रहा कि उसने खाण्डिक्य को गुरु दक्षिणा नहीं दी थी। इसलिए रथ पर सवार होकर, फिर वह खाण्डिक्य के पास गया। उसको आता देख, खाण्डिक्य आयुधों को लेकर, युद्ध के लिए सन्नद्ध हो गया।

"मैं युद्ध करने के लिए नहीं आया हूँ। गुरुदक्षिणा देने आया हूँ। आपकी कृपा के कारण मेरा यज्ञ पूरा हो गया है। बताइये आपको क्या गुरुदक्षिणा चाहिए!" केशीध्वज ने कहा।

खाण्डिक्य ने फिर मन्त्री और पुरोहितों से परामर्श किया। "यह अच्छा मौका है। बिना झिझके, फिर राज्य माँगिये। बिना युद्ध के बिना सेना को काम दिये, गये राज्य को फिर से पाने के लिए इससे अच्छा मौका न मिलेगा।" मन्त्री और पुरोहितों ने सलाह दी। खाण्डिक्य यह सुन हँसा। उसने केशीध्वज के पास जाकर कहा—"मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिए। जो तुम योग विद्या जानते हो, वह बताकर चले जाओ।" यह इच्छा सुन केशीध्वज भी चकित रह गया। क्योंकि उसका भी यही

ख्याल था कि कहीं खाण्डिक्य राज्य न माँगे। वह खाण्डिक्य को गुरु दक्षिणा में अपनी योग विद्या देकर अपने रास्ते चला गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, मुझे एक सन्देह है। खाण्डिक्य ने मन्त्री और पुरोहितों के परामर्श के बावजूद क्यों नहीं अपने विरोधी से अपना राज्य माँगा? उनकी सलाह सुनकर वह क्यों हँसा? क्या इसलिए कि वह राज्य नहीं चाहता था? या केशीध्वज से वह शत्रुता नहीं रखना चाहता था। इन सन्देहों का तुमने जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"खाण्डिक्य सुक्षत्रिय है। इसलिए उसमें राज्य की इच्छा नहीं जा सकती। वह उस व्यक्ति के प्रति जिसने उसका राज्य ले लिया था, मैत्री भी नहीं कर सकता था! वह सुक्षत्रिय था, इसलिए उसने अपने शत्रु से राज्य नहीं माँगा। राज्य बाहुबल से लिया जाता है, माँग मूँगकर नहीं। चूँकि उसमें राज्य को रखने की शक्ति न थी, इसलिए ही केशीध्वज ने उसका राज्य ले लिया था। यदि गुरुदक्षिणा में उस राज्य को लेता भी तो, कुछ दिन बाद केशीध्वज फिर उसको जीत सकता था। यह बात मन्त्री और पुरोहित न जान सके। वे यह भी न जान सके कि माँगना क्षत्रिय का धर्म नहीं है। इसलिए उनकी सलाह सुनकर वह हँसा था।"

राजा का इस प्रकार मौन-भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर चढ़ गया। [कल्पित]
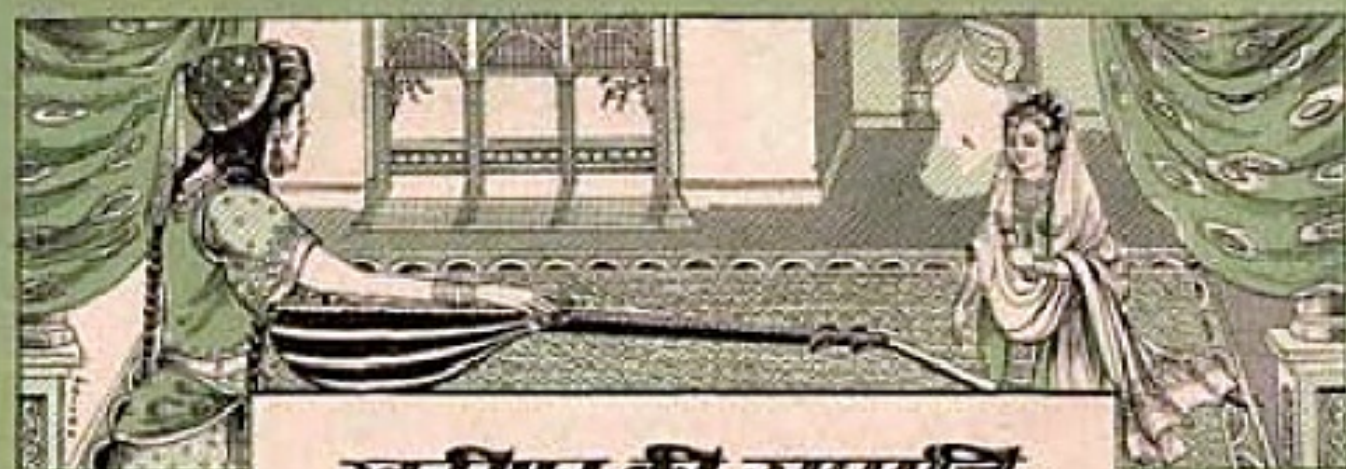
खलीफ़ा की सम्पत्ति

[२]

उस दिन से तुफ़्हा, खलीफ़ा की हृदय रानी बन गई। खलीफ़ा को उसे छोड़कर जब एक क्षण भी रहना पड़ता, तो उसे बड़ी बेचैनी होती। चूँकि वह अक़्लमन्द थी, इसलिए राज कार्य में, वह उसकी सलाह लिया करता। खलीफ़ा ने उसके लिए पचास दासियों को नियुक्त किया। दो लाख दीनारें, महावार उसके खर्च के लिए देता था, इनके अलावा वह उसे हमेशा कोई न कोई भेंट दिया करता था।

उसका प्रेम उसके प्रति इतना था कि उसकी रक्षा का काम किसी और को न देकर, वह स्वयं किया करता। उसके कमरे का ताला लगाकर, ताली साथ ले जाता। यदि किसी कारण वह कभी आँखों में आँसू लाती, तो खलीफ़ा छटपटा उठता।

एक दिन खलीफ़ा शिकार पर गया। तुफ़्हा अपने कमरे में, कोई पुस्तक लेकर पढ़ रही थी कि खलीफ़ा की बड़ी रानी जुबैदा वहाँ आयी। उसे देखकर, तुफ़्हा झट उठी—"महारानी मुझे माफ़ कीजिये। यदि मुझे हिलने डुलने की आज़ादी होती, तो रोज आपकी सेवा करती। कम से कम अब तो मुझे दर्शन भाग्य दीजिये।"

जुबैदा ने उसके पास आकर, बैठकर कहा—"इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। मैं जानता हूँ कि तुम्हारा अच्छा हृदय है। मैं कभी भी उनको देखने नहीं

देखो कि खलीफ़ा महीने में कम से कम एक रात मेरे पास आये। नहीं तो मैं भी दासियों में शामिल समझी जाऊँगी।"

तुफ़हा ने उसका हाथ लेकर, आँखों पर लगाकर कहा—"एक रात नहीं, मेरी तो यह इच्छा है कि खलीफ़ा महीना भर आप ही के यहाँ काटें। मैं तो हमेशा आप ही की दासी होना चाहती हूँ। इसके अतिरिक्त मेरी और कोई इच्छा नहीं है।"

इतने में मालूम हुआ कि खलीफ़ा शिकार पर से वापिस आ गया था। चूँकि जुबेदा जानती थी कि वह सीधे उसके पास ही आयेंगे, इसलिए वहाँ से वह जल्दी निकल गई।

जाती, जो खलीफ़ा के प्रेम की विशेष पात्र होती हैं। परन्तु मैं तुम्हें खोजती आयी हूँ। जानना चाहोगी कि क्यों? तुम्हारे आने के बाद, मेरा जो निरादर हो रहा है, उसके बारे में बताने के लिए। मैं अब बिल्कुल बेकार हो गई हूँ। मेरी स्थिति निस्सन्तान बाँझ की-सी है। खलीफ़ा न मुझे अब देखने आते हैं, न मेरे बारे में सोचते विचारते ही हैं।" वह रोने लगी और उसके साथ तुफ़हा भी रोने लगी।

फिर जुबेदा ने तुफ़हा से कहा—"मैं तुम से एक चीज़ माँगने आया हूँ। यह

खलीफ़ा हँसता, तुफ़हा के कमरे में आया। दोनों के मिलकर भोजन करने के बाद, तुफ़हा ने उसको जुबेदा के पास जाने के लिए कहा। खलीफ़ा ने उसकी इच्छा को ठुकराना न चाहा, उसके कमरे में ताला लगाकर, सीधे वह जुबेदा के पास चला गया।

खलीफ़ा के चले जाने के बाद, तुफ़हा कुछ देर तक अपनी पुस्तक पढ़ती रही।

उसके बाद मजे में वह गाती रही। अकस्मात् उसको कमरे में एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया। दीये की रोशनी में कमरे के बीच में एक वृद्ध, तन्मय हो, नाच रहा था। देखने में बूढ़ा राज-सी ठाटवाला, शानदार दिखाई दिया। वह आँखें मूँदकर वर्णनातीत आनन्द में मानों मस्त था।

तुफ़हा का भय के कारण शरीर ठंडा-सा पड़ गया। उस बूढ़े को उसने कभी न देखा था। उसके कमरे के किवाड़, दरवाजे वगैरह बन्द थे। बाहर हिंजड़े पहरे पर थे। वह अल्लाह का ध्यान करके यूँ गाती रही, जैसे उसने किसी को देखा ही न हो।

कुछ देर बाद, वृद्ध ने नृत्य बन्द करके, उसके पास आते हुए कहा—"वाह, खूब! क्या तुम मुझे नहीं पहिचानती हो!"

"अल्लाह की कसम! तुम्हें देखकर ऐसा लगता है, जैसे तुम भूतों के लोक के भूत हो।"

"तुम्हारा कहना ठीक है, तुफ़हा, मैं भूतों के लोक से आया ही नहीं हूँ,

बल्कि वहाँ का राजा भी हूँ। मेरा नाम इब्लिस है। डरो मत। मैं बहुत दिनों से तुम्हारी रक्षा करता आया हूँ। मेरी पत्नी कमरिया, तुम पर जान देती है। हम दोनों, हर रात को तुम्हें सोता देख आनन्दित होते हैं। चाहे, वह कितना भी देखे, तुम्हारा सौन्दर्य देख कमरिया को तसल्ली नहीं होती। मैं आज उसी की इच्छा पर आया हूँ। यदि तुम मेरे साथ आयी, तो अपने लोक में बड़ा पद दूँगा। आज अच्छा दिन है। मैं अपनी लड़की का विवाह कर रहा हूँ। दावत में तुम ही मुख्य अतिथि हो। हमारी दुनियाँ में तुम जितने दिन चाहो, रह सकती हो। जब तुम वापिस आना चाहो, तब तुम्हें यहाँ पहुँचा दूँगा।" वृद्ध ने कहा।

तुफ़हा तो पहिले ही डर गई थी, उसके निमन्त्रण को वह ठुकरा न सकी। जब उसने सम्मति सूचित करने के लिए अपना सिर नीचा किया, तो इब्लिस उसका हाथ पकड़कर दीवारों में से होता, बाहर ले गया। वहाँ एक घोड़ा तैय्यार था। इब्लिस के तुफ़हा को उस पर सवार करते ही वह आकाश में उड़ा। उस घोड़े के पंख थे। वह आकाश मार्ग में ज़ोर से उड़ा जा रहा था और इब्लिस भी उसके साथ भागा आ रहा था, यह अन्धेरे में भी वह जान सकी। उस रफ्तार के कारण उसका सिर फिर गया और वह बेहोश हो गई। जब उसे होश आया, तो घोड़ा एक विशाल मैदान में चल रहा था। मैदान में फूल ही फूल थे। वहाँ फूलों की कालीन-सी थी। उस मैदान के बीच में, एक ऊँचा महल और उस महल पर ऊँचे शिखर, और अनेक द्वार थे। उन पर ताम्बे के किवाड़ थे। ड्योढ़ी के पास भूत प्रमुख

सिवाय दो के बाकी सब मानव आकृति में ही दिखाई दिये। भूत आकृतिवालों की आँखें माथे पर थीं। उनके दान्त भी थे। उन सब के बैठ जाने के बाद, उनकी रानी, तीन अप्सरा जैसी सुन्दर स्त्रियों को साथ लेकर मुस्कराती हॉल में आकर आसन के नीचे की सीढ़ी चढ़ने लगी। यह भूतों की रानी कमरिया थी और उसके साथ आनेवाली उसकी तीन बहिनें थीं।

तुफ़्हा उनकी अगवानी के लिए नीचे उतरी। दोनों ने आलिंगन किया। फिर कमरिया एक और सोने के आसन पर बैठी। उसने अपनी बहिनों का तुफ़्हा से परिचय कराया।

इतने में खाना परोसा गया। दोनों बदसूरत भूतों को देखकर तुफ़्हा खा भी न सकी। "ये दोनों कौन हैं! क्यों यों भयंकर हैं!" कमरिया से उसने पूछा भी।

"ताकि तुम्हें डर न लगे, इसलिए सब ने मानव रूप धारण कर रखा है। परन्तु उन दोनों ने अभिमानवश, मानव रूप धारण करने से इनकार कर दिया। यह अलशिस्मान है और वह मायिम्न है।" कमरिया ने कहा।

अच्छे अच्छे कपड़े पहिनकर उसकी प्रतीक्षा करते खड़े थे।

इब्लिस को देखकर वे चिल्लाये— "तुफ़्हा आ गई, तुफ़्हा आ गई" और उसको उन्होंने घेर लिया। उसे घोड़े पर से उतारा। उसे एक अति विशाल महल में ले गये। मोतियों से जड़े सोने के आसन पर उन्हें बिठाया। उस हॉल की दीवारें सोने से बनी हुई थीं। हॉल के खम्भे चान्दी के थे।

भूत प्रमुख उसके आसन के नीचे अपने अपने पद के अनुसार खड़े हो गये।

"मैं उनकी ओर नहीं देख सकता। उनमें मायिमून बड़ा ही भयंकर है।" तुफ़हा ने कहा। यह सुन, भूत गुस्सा तो हुए नहीं, और इतने हँसे कि सारा हॉल गूँजने लगा।

दावत के खतम होते ही इब्लिस ने तुफ़हा को गाने के लिए कहा। उसने गाया। उसका गाना सुन भूतों के आनन्द की सीमा न थी। उन्होंने उससे बहुत-से गाने गवाये। उसने बहुत से पुष्पों और पक्षियों पर गाने गाये। उसके गाने के बाद सब ने उसकी अधिक प्रशंसा की। वह भी उनको आनन्दित करके, सन्तुष्ट थी। उसने वापिस जाने की इच्छा प्रकट की।

यह सुन इब्लिस बड़ा दुखी हुआ। उसने उससे कहा—"तुम्हारा गुरु ईषाक मुझे मालूम है। उसे मैंने कुछ तरह के संगीत सिखाये हैं। गिटार बजाने का एक नया तरीका मैं तुमको दिखाऊँगा। यदि तुम ने यह सीख लिया, तो तुम्हें सर्वत्र ख्याति मिलेगी। खलीफ़ा तुमको और भी प्यार करेंगे।" कहकर उसने गिटार पर एक और ढंग से बजाया। उसका वादन सुनकर तुफ़हा को ऐसा लगा, जैसे

उसने जन्म में पहिली बार वास्तविक संगीत सुना हो। इब्लिस के हाथ से गिटार लेकर, उसने उसी की तरह बजाया। सब उसका हुनर देखकर चकित रह गये।

फिर इब्लिस की आज्ञा पर नौकर एक ही तरह के बारह बक्से लाये। "ये सब तुम्हारे लिए हमारी भेंट हैं।" कहकर इब्लिस ने उन बक्सों को खोलकर, उनमें रखे सोने, कीमती कपड़े, सुगन्ध आदि दिखाये। कमरिया ने उससे विदा लेते हुए कहा—"हम कभी कभी आकर तुमको देखती रहूँगी। इस बार अदृश्य होकर न आकर, छोटे बच्चे के रूप में आऊँगी।"

इस बार तुफ्हा को इब्लिस ने अपनी पीठ पर चढ़ाया। कुछ ही क्षणों में वह अपने कमरे में थी। बारह बक्से दीवार से सटकर रख दिये गये। उसे ऐसा लगा, जैसे वह कमरा छोड़कर गई ही न थी। यह जानने के लिए कि वह सपना नहीं देख रही थी, वह गिटार लेकर इब्लिस की सिखाई हुई तर्ज़ बजाने लगी।

कमरे के बाहर खड़ा, सव्वाब नाम का हिजड़ा यह वादन सुन, "अरे, यह तो हमारी मालकिन ही है। वह जितनी तेज़ जा सकता था, उतनी तेज़ी से ख़लीफ़ा के पास गया। वह गिरता पड़ता, ख़लीफ़ा के शयनागार के पास गया। उसके सामने खड़े मस्रूर के सामने उसने साष्टाङ्ग करके कहा—"मैं अच्छी ख़बर लाया हूँ। हुज़ूर को उठाओ।"

"अरे, इस समय ख़लीफ़ा को कैसे उठाया जा सकता है। क्या तुम्हारी अक़्ल मारी गई है!" मस्रूर ने उसे झिड़का। पर सव्वाब ने उसे न छोड़ा। उसके शोर से इस बीच ख़लीफ़ा उठ भी गया।

"मस्सूर क्या शोर हो रहा है!" वह चिल्लाया।

"सव्वाब आपको उठने के लिए कह रहा है।" मस्सूर ने डरते हुए कहा।

"वह मुझसे क्या कहना चाहता है!" खलीफ़ा ने पूछा। उसने अपनी दासी को बाहर भेजा और वह सव्वाब को अन्दर ले गयी।

सव्वाब यह भूल गया कि वह खलीफ़ा से बात कर रहा था। उसने झुक कर सलाम भी न किया। "उठो उठो, हमारी मालकिन तुफ़हा, बजाती गा रही है। आओ सुनो, मेरे बेटे।" उसने बेअदबी से कहा।

खलीफ़ा बिना कुछ कहे, उसकी ओर तरेरने लगा।

"क्या! जो मैं कह रहा हूँ, वह सुनाई नहीं दे रहा है! तुफ़हा अपने कमरे में गा रही है। सुन, सोन्दू कहीं के।" सव्वाब ने कहा।

खलीफ़ा झट पलंग पर से उतरा, जो कुड़ता मिला, उसे पहिनकर कहा—"क्या कह रहे हो, गधे कहीं के! तुम्हारी मालकिन चली गई है, जाफ़र कह रहा था कि उसे कोई उड़ा ले गया है। जिनको भूत उठा ले जाते हैं, वे वापिस नहीं आते। फिर तुम्हारी मालकिन के तो कहने की क्या! क्या सपना देखकर, मुझे उठाने आये हो!"

"सपना! मैं तो सोया ही नहीं हूँ। तुफ़हा नहीं मरी है। तभी मैं तुम्हें बुला रहा हूँ। क्या शक्ल बना रखी है, तुमने!" सव्वाब ने कहा।

खलीफ़ा हँसी न रोक सका। उसने सव्वाब से कहा—"अरे, अगर तुम्हारी बात सच निकली, तो जान ले कि तुम्हारा भाग्य खिल उठा है, तुम्हें आज़ाद करके

हज़ार दीनार ईनाम में दूँगा। यदि झूट निकली, तो तुम्हें फाँसी पर चढ़वा दूँगा।"

"अल्लाह....अल्लाह, इसे सच निकालो। यह सपना न निकले।" गुनगुनाता सव्वाब खलीफ़ा को अपने साथ ले गया। कमरे के पास आकर, खलीफ़ा ने तुफ़्हा का गाना सुना। कमरे का दरवाज़ा खोलने के लिए उसे एक मिनट लगा। कमरा खोलते ही तुफ़्हा उसका आलिंगन करने आयी। परन्तु एक क्षण चिल्लाया। फिर बेहोश हो, उसके हाथ से फिसल गया।

तुफ़्हा की सेवा शुश्रुषा के बाद उसे होश तो आ गया, पर उसे देखकर ऐसा लगता था, जैसे वह नशे में हो, उस नशे के जाने में काफ़ी देर लगी। फिर उसने आह निकालते हुए कहा— "तुफ़्हा, तुम्हारा जाना ही आश्चर्यजनक बात थी, तुम्हारा वापिस आना, तो और भी आश्चर्यजनक है।"

तुफ़्हा ने जो कुछ गुज़रा था, उसे विस्तारपूर्वक उसे सुनाया। जो भूतलोक से वह भेंट लायी थी, उसने उसको दिखाया। उन बक्सों में जो खज़ाना उन्होंने देखा, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। अब्बास वंशीयों की अपार सम्पत्ति का मूल कारण, यह खज़ाना ही था।

तुफ़्हा के वापिस आने के उपलक्ष्य में खलीफ़ा ने बगदाद शहर में उत्सव मनाने की घोषणा की। सारे शहर में दीप जलाये गये। रंग-बिरंगे गुब्बारे उड़ाये गये। दावतें दी गयीं। उस दावत में ईपाक ने इब्लिस की पद्धति पर एक नया कीर्तन बनाकर, गाकर सुनाया। उसके बाद सब सुख से रहने लगे। [समाप्त]

इस बीच सीता दुख से विवश हो उठी। उसने सोचा या तो रावण नहीं तो राक्षस स्त्रियाँ उसको अवश्य मार देंगी और उसका राम की प्रतीक्षा करना बेकार था। वह शिंशुपा वृक्ष के नीचे गई। आत्म हत्या करने के लिए उसने अपने बालों की चोटी गले में लपेट ली।

इतने में उसको शुभ लक्षण दिखाई दिये। उसकी बाँयी आँख फड़की, बाँयी भुजा फड़की। ऐसे लक्षण दीखने पर पहिले उसका शुभ हुआ था—इसलिए इन्हें देखकर, उसकी जान में जान आयी। हनुमान ने शिंशुपा वृक्ष पर चढ़े चढ़े यह सब देखा। सब सुना। पर उसे न सूझा कि क्या करे। उसे राम के बारे में कहकर, उनका सन्देश सीता को पहुँचाना था।

सीता से बिना बात किये, यदि चला गया, तो सीता को राम के बारे में नहीं मालूम होगा और वह दुखी होंगे। शायद आत्म हत्या ही कर लें। यही नहीं, राम अवश्य पूछेंगे कि सीता ने क्या कहा था? यदि मैंने कहा कि मैंने सीता से बात ही न की थी, तो राम मुझे अपनी नजरों से ही जला देंगे और अगर सीता से बात भी करना चाहूँ, तो राक्षस स्त्रियाँ उसके चारों
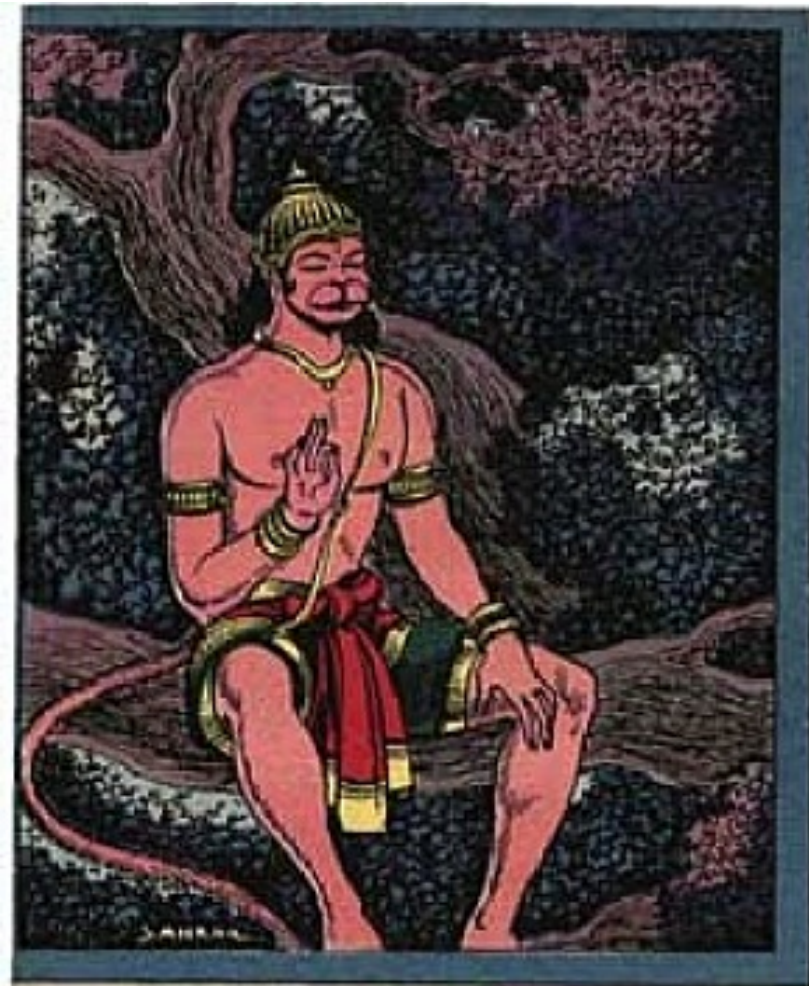
ओर बैठी हैं। संस्कृत में अगर बात की गई, तो ये समझ न सकेंगी, यह तो ठीक है। पर वह यह भी सोच सकती है कि रावण ही यों माया रूप में आया है। उसके भयभीत होकर चिल्लाने से राक्षस स्त्रियाँ हथियार लेकर, मुझ पर हमला कर सकती हैं। वे उसके हाथ से पायल होकर, राक्षस योद्धाओं को बुला लायेंगी। उनसे युद्ध करके थक जाने पर, हो सकता है कि मैं फिर समुद्र न पार कर सकूँ और अगर मैं राक्षसों के हाथ मारा गया, तो सीता को कौन खबर पहुँचायेगा। सीता को मेरी बात सुननी तो चाहिए। पर उसे मुझे देखकर डरना नहीं चाहिए, क्या ऐसा कोई रास्ता है!" हनुमान ने बहुत देर सोचने के बाद एक मार्ग सोच निकाला। वह पत्तों के पीछे इस तरह छुपकर बैठ गया, ताकि उसे सीता देख न सके, फिर उसे देखते हुए उसने यों कहना शुरु किया।

दशरथ नाम का एक बड़ा राजा था। उसका बड़ा लड़का राम बड़ा सुन्दर और बाण विद्या में प्रवीण था। पिता की आज्ञा पर वह, भाई और पत्नी के साथ बन में गया। वहाँ उसने खर आदि कई राक्षसों को मारा। यह देख रावण ने सोने के हरिण की सहायता से उसकी पत्नी सीता का अपहरण किया। राम सीता को खोजता आया। सुग्रीव से स्नेह करके, वाली नाम के बानर राजा को मारकर, उसके राज्य को सुग्रीव को दे दिया। उस सुग्रीव ने सीता का पता करने के लिए चारों दिशाओं में हजारों वानर भेजे। उसी प्रयत्न में मैं सौ योजनवाले समुद्र को पार करके, इस लंका में आया और राम के दिये हुए वर्णन के आधार पर सीता को देख सका।

हनुमान के इन बातों के कहने पर सीता ने आश्चर्य और स्वाभाविक भय से सिर उठाकर, शिंशुपा वृक्ष की ओर देखा। उसे हनुमान दिखाई दिया। सीता को अपनी आँखों और कानों पर ही विश्वास न हुआ। उसने सोचा कि वह सपना देख रही थी और सपने में बन्दर का दिखाई देना अशुभ था। वह डरी। फिर वह जान गयी कि वह सपना नहीं देख रही थी। फिर सोचा कि शायद उसे भ्रम हो गया था। चूँकि वह हमेशा राम के बारे में ही सोचती जा रही थी, इसलिए शायद उसे ऐसा भ्रम हुआ हो कि कोई और राम के बारे में उसे कह रहा हो।

इतने में हनुमान पेड़ पर से उतर आया। उसने थोड़ी दूर पर खड़े होकर, नमस्कार करके कहा—"तुम कौन हो, जो यूँ फटी पुरानी साड़ी पहिने, पेड़ की टहनी पकड़े खड़ी हुई हो? तुम किस जाति और गुण की हो? तुम देवी-सी जान पड़ती हो? तुम्हारा पिता कौन है? पति कौन है? बड़े दुख में हो? क्या तुम्हारा कोई बन्धु मारा गया है? यदि तुम जन स्थान से अपहृत सीता हो, तो तुरत यह बता दो।"

सीता ने हनुमान को देखकर कहा—"मैं दशरथ की बहू हूँ। जनक की लड़की हूँ। राम की पत्नी हूँ। मेरा नाम सीता है। मेरी गृहस्थी के तेरहवें साल में, मेरा पति का राज्याभिषेक होना था कि दशरथ की पत्नी कैकेयी ने कहा कि यदि राम का पट्टाभिषेक किया गया, तो वह प्राण छोड़ देगी। उसने हठ किया कि राम को बनवास दिया जाय। पिता के कहने पर राम ने राज्य वापिस दे दिया। उन्होंने वल्कल वस्त्र पहिनकर, बनवास पर जाते समय मुझे अपनी माँ कौशल्या के पास

तुम्हारे कुशल समाचार मालूम करके आने के लिए कहा है। लक्ष्मण ने अपना साष्टाङ्ग कहा है।"

यह सुनते ही सीता को रोमान्च हुआ। "अगर कोई जीवित रहे, तो सौ वर्ष में कभी न कभी तो आनन्द मिलेगा ही। यह मेरे बारे में बिल्कुल ठीक है।" सीता ने कहा।

यह देख कि सीता को उस पर विश्वास हो गया है हनुमान उसके पास आया। सीता ने सोचा कि रावण ही वानर रूप में आया था, उसे भय हुआ कि क्यों उसने उसके साथ आत्मीयों की तरह बात की थी—इसलिए वह अशोक वृक्ष छोड़कर नीचे बैठ गयी। उसे नमस्कार करते हनुमान को देखने का साहस न हुआ। उसने हनुमान से कहा—"तुम सचमुच रावण हो। अब बन्दर के रूप में आये हो। उस दिन सन्यासी के रूप में आये थे। मैं पहिले ही उपवास और दुख के कारण दुर्बल हूँ, क्यों मुझे यों तंग करते हो! तुम्हारा ऐसा करना ठीक नहीं है। यदि तुम राम के सच्चे दूत हो, तो उनके गुणों का वर्णन करो। राम और

रहने के लिए कहा। मैं राम का वियोग नहीं सह सकती थी, इसलिए मैं उनके साथ चली आयी। मुझसे पहिले ही लक्ष्मण वल्कल वस्त्र पहिनकर जाने को तैय्यार था। हम दण्डकारण्य में थे कि दुष्ट रावण मुझे यहाँ उठा लाया। वह रावण मुझे और दो मास जीने देगा, फिर मुझे मार देगा।"

सीता को दुखी देखकर, हनुमान भी दुखी हुआ। उसने उसका दुख शान्त करने के लिए कहा—"सीता देवी! मैं राम के दूत के तौर पर यहाँ आया हूँ। राम ने अपने कुशल समाचार भेजकर,

लक्ष्मण के बारे में बताओ। राम से तुम्हारा सम्बन्ध कब हुआ? तुम राम और लक्ष्मण को कैसे जानते हो? नर वानर का सम्बन्ध कैसे हुआ?"

हनुमान ने राम के गुणों का वर्णन किया। राम का आपाद मस्तक वर्णन किया। सीता के अपहरण के बाद राम के ऋष्यमूक पर्वत पर आने से उसके लंका आने तक उसने सारा वृत्तान्त सुनाया। उसने कहा कि वह हनुमान था और सुग्रीव का मन्त्री था। फिर उसने राम की दी हुई अंगूठी दी।

सीता को हनुमान पर विश्वास हो गया। उसका मुँह खिल-सा गया। उसने हनुमान की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह मामूली बन्दर न था, वह बड़ा शक्तिशाली था, तभी तो वह समुद्र पार करके लंका आ सका था। रावण भी उसका कुछ न बिगाड़ सकेगा। वह सपने देखने लगी कि राम तुरत आकर उसकी रक्षा करेगा। अयोध्या से भरत भी एक अक्षौहिणी सेना भेजेगा। राम और लक्ष्मण युद्ध में रावण और उसके साथियों को मार देंगे। उसे फिर यह भी सन्देह हुआ कि राम उसको ले जायेंगे कि नहीं, यदि न ले गये, तो उसने प्राण त्यागने का निश्चय किया।

"राम हमेशा सीता को ही याद करते रहते थे। उसके चले जाने के बाद उन्होंने मांसाहार और मद्यपान भी छोड़ दिया था।" हनुमान ने कहा। उनको यह मालूम होते ही कि सीता कहाँ है, वे यहाँ तुरत आ जायेंगे। सीता ने हनुमान से कहा कि रावण ने उसे एक वर्ष की अवधि दी थी और उसमें से अब केवल दो मास ही रह गये हैं—राम को आने के लिए उसने कहा। हनुमान से सीता ने एक और बात कही कि लंका में

यह सुन हनुमान को लगा जैसे किसी ने उसका अपमान कर दिया हो। वह सीता से कुछ दूर गया और उसने अपना शरीर बड़ा किया। उसका शरीर आग की तरह चमचमाने लगा। "सीता देवी, आपको ही नहीं, इस सारी लंका को जड़ से उखाड़कर ले जा सकता हूँ। आप डरो न, मेरे साथ चली आओ।"

परन्तु सीता ने आपत्ति प्रकट की, तुम मुझे जब पीठ पर सवार करके निकलोगे, तो सायुध राक्षस तुम्हें घेर लेंगे और वह डरकर समुद्र में गिर सकती है और ऐसा करने से हनुमान पर आपत्ति आ सकती है और उस पर भी। और अगर हनुमान ने सब राक्षसों को मार भी दिया, तो उससे राम का ही अपयश होगा। इसलिए उसने कहा कि हनुमान का वापिस जाकर, राम को बुलाकर लाना ही उत्तम था। सीता ने सोचा कि वह परपुरुष था, इसलिए वह उसे छूना न चाहती थी—उसने कहा—"तुम सोच रहे हो, क्या रावण ने मुझे नहीं छुआ था! तब कुछ और बात थी, मैं दुखी भी थी। मेरा पति मेरे पास न था।"

उसका पक्ष लेनेवाले भी कुछ थे। उनमें विभीषण, उसकी पत्नी, उसकी बड़ी लड़की नला और अविन्ध्य नाम के राक्षस थे।

हनुमान ने सीता से कहा—"अब आपको एक क्षण भी दुख नहीं करना चाहिए। मेरी पीठ पर सवार हो जाओ। एक क्षण में समुद्र पार हो जायेंगे।"

हनुमान छोटे आदमी के रूप में था, इसलिए सीता को उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। "मैं कैसे तुम्हारी पीठ पर सवार होकर, समुद्र पार कर सकती हूँ। आखिर हो बन्दर ही।"

हनुमान ने यह समझकर कहा—"मैं परपुरुष हूँ और मेरी पीठ पर सवार होकर जाने में आपको आपत्ति होना ठीक ही है। ताकि राम यह जान सकें कि मैंने आपको देखा है, आप मुझे कोई निशानी दीजिए।"

ताकि राम को पता लग सके, सीता ने हनुमान को एक पुरानी घटना बतायी। यह घटना चित्रकूट पर्वत पर, गंगा के किनारे, एक ऋषि के आश्रम में जब राम और लक्ष्मण थे, तब हुई थी। एक दिन सीता वहाँ के पुष्प वन में विहार करके थक गई और राम की गोदी में बैठ गई। तब एक कौव्वे ने आकर, सीता की छाती को कुरेदा। सीता को गुस्सा आया, उसने उसको भगाया। परन्तु वह कौव्वा भागा नहीं और बार-बार उसके पास आता रहा। राम ने सीता को कौव्वे से परेशान पा, उसका उपहास किया। फिर उसने उसको आश्वासन दिया। फिर सीता राम की गोदी में सिर रखकर सो गई। उसके उठने पर राम उसकी गोदी में सिर रखकर सो गये। फिर वह कौव्वा आया और सीता की छाती का माँस कुरेद कर खाने लगा। उसका इतना खून निकला कि राम भी खून से भीग गये।

सीता कौव्वे से इतनी तंग हो गई कि उसने राम को उठाया। सीता का घाव देखकर उसने क्रुद्ध होकर कहा—"कौन दुष्ट है वह, जिसने यह घाव किया है!" जब इधर उधर देखा, तो उसे एक कौव्वा दिखाई दिया, जिसके नाखून खून से लथपथ थे। राम ने दर्भासन से एक तिनका निकला, ब्रह्मास्त्र मन्त्र पढ़ा। वह दर्भ प्रलयाग्नि की तरह उसकी ओर गया।

जड़भरत

पहिले कभी ऋषभ नाम का राजा था। वह इतना शक्तिशाली था कि उसने इन्द्र तक को हराया था। उसके जयन्ती नामक पत्नी से अनेक लड़के थे। उनमें बड़ा भरत था। इसके छोटे भाई इलावर्त, कुशावर्त, ब्रह्मावर्त, आर्यावर्त, मलयकुतु, भद्रसेन आदि थे। जिन जिन भिन्न-भिन्न देशों पर इन्होंने राज्य किया उन सब देशों के नाम भी उन्हीं के नाम से बने।

भरत की पत्नी पंचजनी थी। इनके सुमति, राष्ट्रभुक, सुदर्शन, आवरण, धूम्रकेतु नामक लड़के हुए। ऋषभ के बाद भरत राजा हुआ। उसने अजनाभ नामक राज्य पर कई साल राज्य किया। फिर उसने अपना राज्य अपने लड़कों को दे दिया और स्वयं तपस्या करने के लिए पुलस्त्यपुल आश्रम में जाकर, साल्ग्राम नामक पुण्यक्षेत्र में रहने लगा।

एक दिन भरत चक्र नदी में स्नान करके जप कर रहा था कि एक गर्भिणी हरिणी वहाँ पानी पीने आयी। इतने में कहीं से सिंह का गर्जन सुनाई दिया। उससे डरकर, हरिणी नदी के किनारे पर कूदी। इस तरह छलांग मारने के कारण उसके पेट का हरिण का बच्चा बाहर निकल आया और वह हरिणी, जो कूदी थी, वहीं मर गई।

प्रवाह में बहते हरिण के बच्चे को लेकर, भरत अपने आश्रम में ले गया। हमेशा उसके भरण-पोषण में इतना मस्त रहता कि वह तपस्या करना ही भूल गया। जब तक जीवित रहा, उस हरिण के बच्चे की

प्रति उसकी ममता बनी रही। आखिर मरते समय भी वह उसे देखता ही मरा।

उस कारण ही शायद भरत अगले जन्म में हरिण के रूप में पैदा हुआ। चूँकि उसने पिछले जन्म में तपस्या की थी, इसलिए उसे पूर्व जन्म याद रहा। इसलिए पैदा होते ही उसने माँ को छोड़ दिया। सालग्राम क्षेत्र में आ गया और वहीं पत्ते वगैरह खाते, आत्मा को उसने परिशुद्ध किया और वहीं उसने हरिण के जीवन को समाप्त किया।

फिर वह अंगिरस नामक ब्राह्मण के लड़के के रूप में पैदा हुआ। वह जब से पैदा हुआ मूढ़ की तरह रहने लगा। जब गुरु के पास भेजा गया, तो उसने कुछ पढ़ा लिखा भी नहीं। वैदिक कर्मकान्ड भी न किया करता। डाँटने पर जवाब न दिया करता। सौतेले भाइयों ने उसका उपहास किया। उसे वे भोंदू कहा करते। वह चीथड़े पहिनकर, धूल धूसरित हो, इधर-उधर घूमा करता। लोग उससे दूर ही रहते। कई उस पर पत्थर फेंकते। उस अपमान और प्रहारों को उसने जैसे तैसे सहा। जो कुछ मिलता, वह उसे खाकर, पेट-भर लेता।

कुछ दिन बाद उसका पिता मर गया। उसके भाइयों ने उसे ले जाकर, खेतों में हल चलवाया। खेत का काम करवाया। न उसे दिन की फिक्र थी, न रात की, न रोशनी की, न अन्धेरे की, जो कुछ उसके भाई उसे खाने को देते, उसे खा, दिन-रात काम किया करता।

उस देश के राजा वृषल ने कालिका देवी को नर बलि देने का निश्चय किया। उसके आदमी बलि के लिए एक आदमी को पकड़ लाये। वह भाग गया। जब वे उसे खोज रहे थे, तो सैनिकों को भरत

दिखाई दिया। वृषल ने जब उसे कालिका देवी को बलि देना चाहा, तो कालिका ने राजा और उसके अनुचरों को निगल लिया और उसे छोड़ दिया।

फिर भरत ने देश संचार शुरु किया। सिन्धु देश का राजा रहुण तत्वज्ञान पाने के लिए पालकी पर सवार होकर, कपिल महामुनि के आश्रम के लिए निकला। रास्ते में पालकी ढ़ोनेवाले कहारों को भरत दिखाई दिया। उसे बेकार-सा जान उन्होंने पालकी का डँडा उसके कन्धे पर रखा।

भरत ने इस पर भी आपत्ति न की। वह पालकी ढ़ोने लगा। परन्तु उसे बोझ उठाना न आता था। बाकी कहारों के साथ वह भाग न पाता था। पैर डगमगाने लगे। पालकी इधर-उधर खिसकने लगी। राजा ने कहारों को डाँटा। कहारों ने भरत को दिखाकर कहा—"इसके कारण ही पालकी इधर-उधर खिसक रही है।"

राजा ने भरत का मज़ाक करते हुए कहा—"पालकी बहुत दूर से ढो रहे हो, इसलिए शायद थक गये हो! ताकतवर

भी नहीं हो, इसलिए थकान ज्यादह होती है।"

"न मुझमें ताकत है, न थका ही हूँ। मैं तुम्हारी पाल्की ढो ही नहीं रहा हूँ। कोई और ढो रहा है।" भरत ने कहा।

"अरे, तुम्हारे कन्धे पर पाल्की है और कह रहे हो कि पाल्की ढो ही नहीं रहे हो!" राजा ने पूछा।

"राजा, जो तुम देख रहे हो, वह ही तुम नहीं समझ पा रहे हो। इसलिए असत्य बोल रहे हो। प्रत्यक्ष सत्य मैं बताता हूँ, सुनो। कन्धे पर पाल्की है। उसके नीचे हाथ और छाती हैं। उसके नीचे पेट, पेट के नीचे पैर, फिर पाँव और फिर भूमि। ये सब एक दूसरे को ढो रहे हैं। फिर बीच में तुम क्यों कहते हो कि मैं तुम्हारी पाल्की ढो रहा हूँ। कारणान्तर से जो भेद पैदा होते हैं, उसे संसार सत्य समझता है। मान लो, तुम पाल्की पर सवार हो और पाल्की लकड़ी से बनी है। वह लकड़ी पेड़ से आयी है। इसलिए कहा जाये कि तुम पेड़ पर चढ़े हो, तो इसमें कोई असत्य नहीं है। परन्तु उसे दुनिया नहीं मानेगी। इस अज्ञान के कारण तुम पाल्की में ढोये जा रहे हो और समझ रहे हो कि कोई और ढो रहा है।"

यह सुन राजा पाल्की से उतरा और भरत के पैरों पर पड़कर उसने कहा—"महात्मा! मैं तत्वज्ञान पाने के लिए ही निकला हूँ। वह ज्ञान आपने ही दे दिया है।" भरत ने उसे उपदेश देकर भेज दिया।

२७. पीसा का मीनार

इटली में, आर्नो नदी के समुद्र में गिरने से कुछ दूर पहिले पीसा नामक नगर है। यह कभी समुद्री व्यापार के लिए प्रसिद्ध प्रजातन्त्र था। यह शिल्प के लिए भी काफ़ी प्रसिद्ध था।

नौका युद्ध में विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में १०६७ में पीसा के वासियों ने एक केथेड्रल बनाना शुरु किया। सफेद, काले, संगमरमर का बना भवन ११९८ में पूरा हुआ।

इसके पास ही जगत्विख्यात "झुकी हुई मीनार" है। इसमें शिल्प बड़ा बारीक है। इसको "गड़रिये की मीनार" भी कहा जाता है। क्योंकि इसका निर्माता गियोटो, कभी गड़रिया था।

इस मीनार की ऊंचाई १७९ फीट चूँकि वह भूमि में एक तरफ़ खिसक गया है, इसका उपरला भाग १५ फीट एक तरफ़ झुक गया है।

हाल में मिले हुए समाचारों से ज्ञात होता है कि यह मीनार ढहनेवाली है।

Photo by Ravinder Kumar Paul
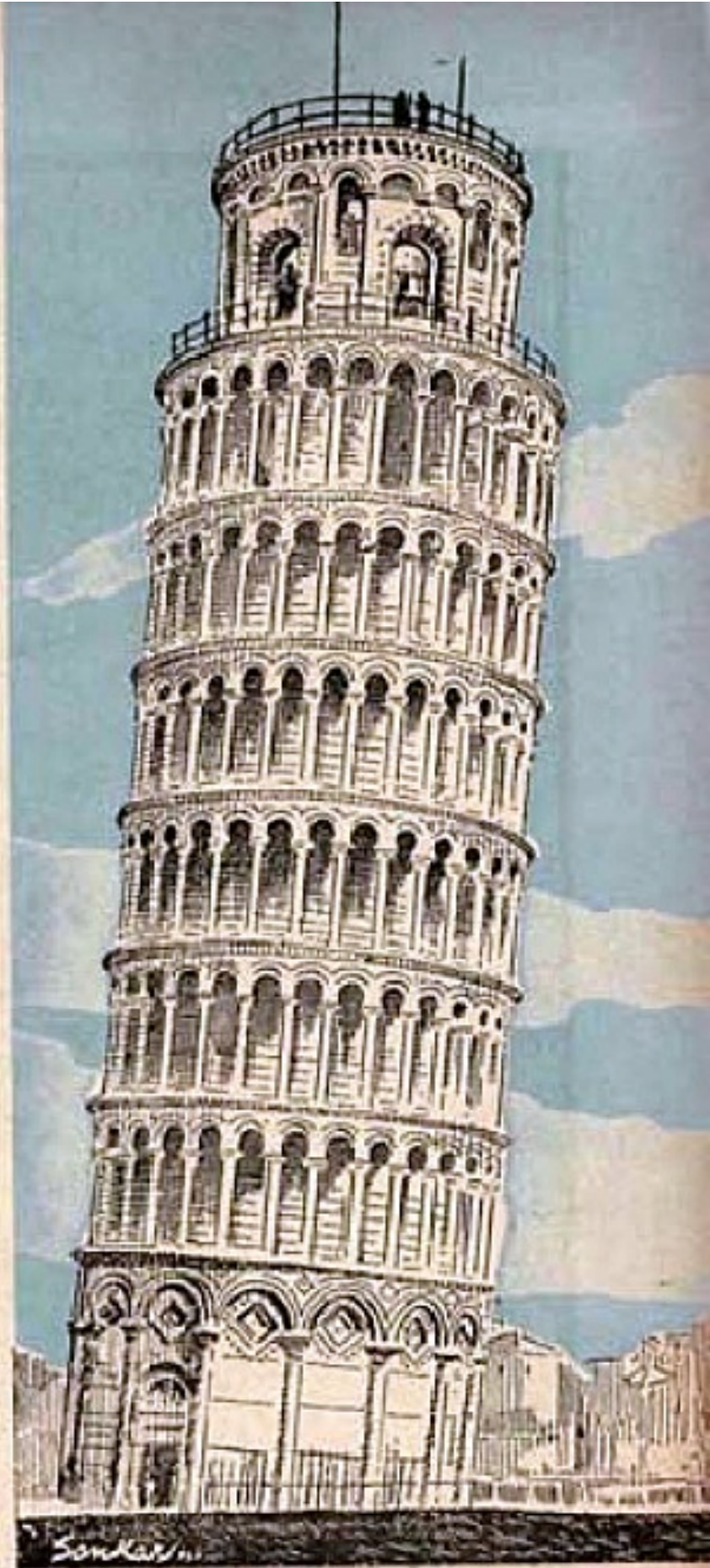
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

इसे खाने में परेशानी!

प्रेषक:
कु. कुमार मांडलिक-मन्दसौर

Photo by C. P. Patel

पुरस्कृत परिचयोक्ति

तो इसे पाने में !!

प्रेषक : मु. कुमार मांडलिक-मन्दसौर